₹15/-

हँसती दुनिया

वर्ष 43 ★ अंक 3

मार्च 2016

हँसती दुनिया

• वर्ष 43 • अंक 3 • मार्च 2016 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य संपादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

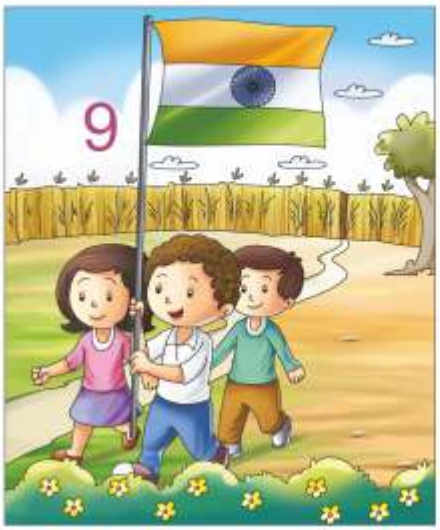

स्तम्भ

4 सबसे पहले
5 सम्पूर्ण अवतार बाणी
6 अनमोल वचन
10 कभी न भूलो
16 समाचार
20 वर्ग पहेली
40 क्या आप जानते हैं?
44 पढ़ो और हँसो
46 जन्म दिन मुबारक
48 रंग भरो परिणाम

चित्रकथाएं

12 दादा जी
36 किट्टी

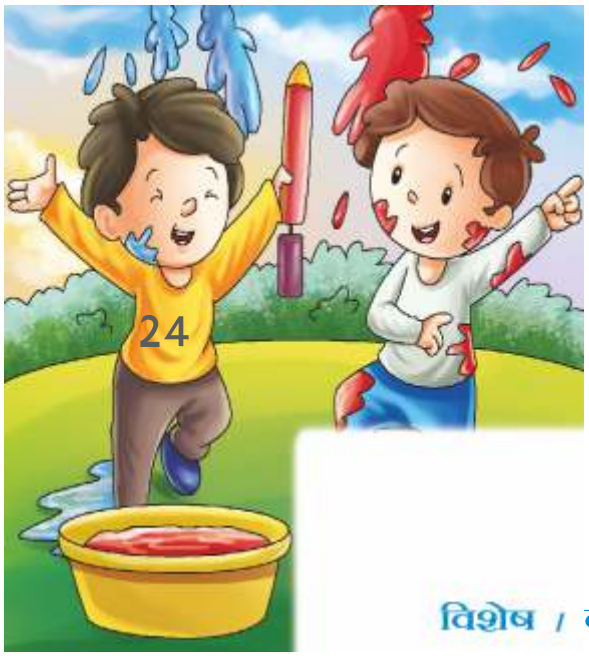

कहानियां

7. **चुनमुन की चतुराई**
राजकुमार जैन 'राजन'

17. **छाता**
राधेलाल 'नवचक्र'

25. **फूल बोला**
डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

34. **नास्तिक**
चाँद मोहम्मद घोसी

विशेष / लेख

8. **बुद्धि का कमाल**
अर्चना जैन

21. **पौराणिक कहानियों में होली**
दिनेश दर्पण

22. **पहेलियां**
पंकज कुमार निरंकारी
अतुल निरंकारी

30. **उड़ीसा का राज्य पशु : सांभर**
डॉ. परशुराम शुक्ल

42. **कृत्रिम रंगों का सेहत पर प्रभाव**
डॉ. विनोद गुप्ता

कविताएं

9. **आगे ही बढ़ते जाएंगे**
नवीन चतुर्वेदी

11. **आई है प्यारी होली**
मीनू सिंह

23. **निडर थे भगतसिंह**
हरजीत निषाद

24. **आई है भइया होली रे!**
राजेन्द्र निशेश

24. **खुशियों का संसार होली**
गोविन्द भारद्वाज

41. **होली के रंगों के संग**
डॉ. देशबन्धु 'शाहजहांपुरी'

47. **तुम सोने से खरे हो बच्चो**
मदन 'शेखपुरी'

सही सोच सही दिशा

दो बच्चे स्कूल के बाहर स्कूल की छुट्टी होने के बाद आपस में झगड़ रहे थे। उत्सुकतावश मैंने उनसे पूछ लिया– बेटा क्या बात है?

एकदम एक बच्चा दूसरे की तरफ इशारा करके कहने लगा कि इसने मेरी शिकायत मेरी टीचर को लगाई थी और टीचर ने मुझे डांटा।

मैं पूछ बैठा कि शिकायत ठीक थी या नहीं।

वह बच्चा कहने लगा– इस बात का तो प्रश्न ही नहीं है। बात तो यह है कि इसने शिकायत लगाई ही क्यों? मैं उस समय बच्चों को कुछ नहीं कह सका और दोनों को समझा–बुझाकर कि अच्छे बच्चे लड़ते नहीं आगे बढ़ गया।

मैं सोचते–सोचते धीरे–धीरे अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहा था कि मुझे उन दो भाइयों की बात याद आ गई जो मेरे परिचित हैं। मैं उनके घर गया था और दोनों भाई आपस में ऊँची आवाज में बातें कर रहे थे। मेरे पूछने पर छोटे भाई ने बताया कि बड़े भाई ने मुझे मेरे दोस्तों के सामने डांटा। यह मुझे बहुत बुरा लगा। अगर बड़े भाई ने मुझे समझाना ही था या गुस्सा करना ही था तो अकेले में कर सकते थे, परन्तु सबके सामने नहीं।

लगभग इसी तरह की अलग–अलग बातें सभी के साथ होती रहती हैं। ऑफिस में अधिकारी अपने नीचे काम करने वालों पर अक्सर इस तरह का व्यवहार करते रहते हैं। मालिक नौकर के साथ और कभी घर में पति–पत्नी में इस तरह के किस्से सामने आते रहते हैं।

यहाँ सोचने का विषय यह है कि अगर ऐसा होता ही रहता है तो इसका कारण क्या है? बड़े अपने आपको बड़ा होने का अधिकार समझकर छोटों को नियंत्रित करने में नहीं चूकते इससे छोटों के स्वाभिमान को अनायास ही चोट पहुँच जाती है। छोटे बच्चे अपनी शिकायत टीचर से होने पर दुखी हो जाते हैं तथा भाई–भाई आपस में छोटी–सी बात पर उलझ जाते हैं।

इसी तरह समाज के हर हिस्से में यह समस्या कायम है। मेरी शिकायत क्यों हुई। इसका तो बोध बालक को भी है परन्तु उसने स्वयं क्या गलती की इसकी तरफ वह ध्यान ही नहीं देता। इसी तरह बड़ा भाई छोटे की गलती पर कुछ कहे तो छोटा गलती को सुधारने की बजाय मान–अपमान के चक्कर में फंस जाता है, पति–पत्नी की नोंक–झोंक रिश्तों को टूटने के कगार पर ला देती है, मालिक नौकर को अपना गुलाम समझकर उनको अपमानित करता है इत्यादि–इत्यादि।

साथियों, यहाँ हम सबको अपनी सोच को, विचार को नई दिशा देनी होगी और यही समय है कि हर व्यक्ति अपनी–अपनी सोच को जागरूकता से परखें और तभी उस पर अमल करे। अगर बड़े अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएं, सिखाने वाले पहले खुद सीखें तो किसी को कहना नहीं पड़ेगा बल्कि हमारा व्यवहार ही दूसरों को ठीक कर देगा। यह बात स्मरणीय होनी चाहिए कि जब हम किसी भी वक्त किसी का भी अपमान कर रहे होते हैं तो ठीक उसी समय हम अपना सम्मान दूसरों की नज़र में भी खो रहे होते हैं।

इसलिए 'बिना विचारे जो करे वह पीछे पछताए' वाली कहावत के अनुसार कहीं ऐसा न हो कि हम अपनी नज़रों में स्वयं ही नीचे हो जाएं।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 130

रमे राम नूं ढूंडण दे लई जंगलां दे विच जावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई अंग भभूत लगावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई सुन्न समाधी लावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई गंगा जमना न्हावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई पूजा पाठ रखावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई पीर फ़कीर मनावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई अपणा आप लुटावण कई।
रमे राम नूं ढूंडण दे लई दर दर धक्के खावण कई।
हौमें ते चतुराईयां छड के साध शरण जो जांदे नें।
कहे अवतार करे गुर किरपा निज घर वासा पांदे नें।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह प्रभु–परमात्मा, यह ईश्वर, यह अल्लाह, गॉड, वाहेगुरु, यह राम हमारे अंग–संग हैं। इस रमे राम को प्राप्त करने के लिए, इसे ढूंढ़ने के लिए संसार के लोग कितने–कितने प्रकार के यत्न करते हैं। कई लोग इस रमे राम को ढूंढ़ने के लिए जंगलों में चले जाते हैं। कई इस प्रभु को प्राप्त करने के लिए शरीर पर भभूत (राख) लगाते हैं। कई इस रमे राम को ढूंढ़ने के लिए सुन्न समाधि (मूर्ति के समान सुन्न जैसी अवस्था में लगातार बैठे रहना) लगाते हैं। इस रमे राम की तलाश में अनेकों लोग गंगा, जमुना आदि नदियों में स्नान करते हैं। इस रमे राम को ढूंढ़ने के प्रयास में कई लोग अपने घरों में पूजा–पाठ रखवाते हैं तो कई पीरों–फकीरों को मनाने में लगे रहते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी संसार के लोगों को समझा रहे हैं कि रमे राम को ढूंढ़ने के लिए अज्ञानतावश लोग अपना–आप लुटाते हैं और दर–दर धक्के खाते फिरते हैं। संसार के लोगों को इस घोर निराशा से निकलने का उपाय बताते हुए बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि जो इन्सान अपना अहंकार और चतुराई छोड़कर साधु अर्थात ब्रह्मज्ञानी सन्त की शरण में आ जाते हैं। वे अपने जीवन का परम लक्ष्य अर्थात् रमे राम को प्राप्त कर लेते हैं। वे ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु की कृपा से निज घर में निवास प्राप्त करते हैं। वास्तविकता में गुरु की कृपा से निज घर में निवास पाना भी हर मानव के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है।

अनमोल वचन

संकलनकर्ता : प्रियंका चोटिया 'आंचल' (चार के.एस.पी.), सहजता (दिल्ली)

★ परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।

★ जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।

★ अभिमान जूते में कंकर की तरह होता है जो दुःख ही देता है।

★ हम, महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रहकर उनकी (बात) भी मानें।

★ अगर किसी को मरता–कुचलता देखकर अपने मन में खुशी महसूस करते रहेंगे तो हम धार्मिक नहीं है।

– सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी

★ उठो, जागो और अपने लक्ष्य पर पहुँचने से पहले मत रूको।

★ आत्मविश्वास सरीखा दूसरा कोई दोस्त नहीं। – स्वामी विवेकानन्द

★ स्वार्थ छोड़ना ही धार्मिकता की सच्ची कसौटी है।

★ अगर कोई दृढ़ रहे तो पतन का गम नहीं, उठकर वह फिर आगे चल देगा।

– जी. अरविंद

★ अपनों द्वारा की गई उपेक्षा अपराध है।

– प्रेमचन्द

★ ज्ञान पाप हो जाता है, यदि उद्देश्य शुभ न हो। – अफलातुन

★ वह व्यक्ति जो अपनी खुशियां छिपा सकता है, उस व्यक्ति से अधिक महान वह है जो अपने गम छिपा सकता है।

– लेबेटर

★ एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है।

– चार्ल्स बक्सटन

★ प्रेम के साथ खिलाई गई वस्तु चाहे मामूली हो, प्रशंसा किए बिना न रहो।

– संत काशीराम

★ जो कुछ न्यायसंगत है उसे कहने के लिए सभी समय उपयुक्त हैं। –सोफोक्लाज

★ फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करने वाला ही मोक्ष पाता है।

– श्रीमद्भगवद्गीता

★ महान पुरुष वही है जो कहने से पहले स्वयं अमल करता है और केवल उस बात को कहता है जिसे वह करता है।

– सन्त कन्फ्यूशियस

चुनमुन की चतुराई

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

हंसमुख कंगारू का घर अटलांटा वन का सबसे सुन्दर घर था। घर के सामने एक बगीचा था जिसमें मखमल–सी हरी–हरी दूब थी। बगीचे में विभिन्न प्रकार के फूलों के पौधे एवं पेड़ थे। कंगारू के दो छोटे–छोटे प्यारे बच्चे थे।

इसी घर के बगीचे में एक नन्हीं चिड़िया चुनमुन, तितली रंगीली एवं एक टिड्डा मनमौजी रहता था। ये तीनों पक्के मित्र थे। चुनमुन ने हंसमुख के घर में रोशनदान में अपना घोंसला बना रखा था जिसमें बाहर की ओर से जाली लगी हुई थी। शाम के बाद ये तीनों मित्र खिड़की के पास मिलते और ढेरों बातें करते। हंसमुख के बच्चों को खेलते हुए देखकर प्रसन्न होते। इसी तरह तीनों मित्रों के दिन हँसी–खुशी में बीत रहे थे।

एक दिन न जाने कहाँ से एक बड़ी जंगली मकड़ी भी उस खिड़की में आ गई। उसने खिड़की में एक बड़ा–सा जाला बुन लिया। अब टिड्डा मनमौजी परेशान कि वह खिड़की के बाहर कैसे जाए– एक तरफ जाली है तो दूसरी तरफ मकड़ी का जाला। जाली की तरफ से जाना असंभव था और मकड़ी के जाले को पार करना अपने को जोखिम में डालना था। उधर मकड़ी मनमौजी को देखकर खुश हो रही थी कि देखें वह कब तक बचेगा! आखिर कभी तो वह इसमें फंसेगा ही।

तभी मनमौजी ने देखा कि रंगीली तितली अपने पंखों को फड़फड़ाती फूलों पर घूम रही है। मनमौजी ने आवाज देकर रंगीली को बुलाया और अपनी मुसीबत बताई। रंगीली ने कहा, "भैया, मुझे तुमसे पूरी सहानुभूति है, लेकिन मैं मकड़ी का

जाला नहीं तोड़ सकती। अगर मैंने ऐसा करने का प्रयास भी किया तो मैं स्वयं इसमें फंस जाऊंगी।''

मनमौजी की उदासी देखकर रंगीली ने उसे ढांढस बंधाते हुए कहा, ''तुम चिंता मत करो। मैं अभी चुनमुन चिड़िया को ढूंढती हूँ। वह बुद्धिमान है, कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेगी।''

रंगीली चुनमुन को खोजने निकल पड़ी। उसे खोजने में उसे अधिक देर नहीं लगी। रंगीली ने उसे मनमौजी की परेशानी व मकड़ी की दुष्टता के बारे में बताया। चुनमुन ने कुछ सोचा और कहा, ''चलो वहीं चलकर देखते हैं।''

चुनमुन और रंगीली उड़कर घर के कमरे में आई। उस वक्त कंगारू हंसमुख और उसके दोनों बच्चे कहीं घूमने गये हुए थे। मकड़ी ने अपना जाला और घना एवं मजबूत बना लिया था। चुनमुन ने सोचा कि एक बार किसी तरह जाला तोड़ भी दिया जाए तो वह फिर से जाला बना लेगी अतः इसका कोई स्थायी हल निकालना चाहिए।

उसने देखा, टेबल पर हंसमुख का कोई आवश्यक कागज पड़ा हुआ था। चुनमुन ने वह कागज उठाया और जाले के ऊपर फेंक दिया। कागज जाले में उलझकर रह गया। इतने में हंसमुख आ गया और उस आवश्यक कागज को खोजने लगा। मनमौजी तो खिड़की के सुराख में घुस गया।

हंसमुख की नजर तभी जाले में उलझे कागज पर पड़ी। उसने कागज उठाया और बड़बड़ाने लगा– ''घर में कितनी गंदगी हो गई है। सब जगह जाले लग गये हैं।'' कहता हुआ वह अन्दर से झाड़ू उठा लाया। झाड़ू से जाला हटाकर उसने मकड़ी को बाहर फेंक दिया।

इस प्रकार चुनमुन की चतुराई से मनमौजी की परेशानी दूर हो गई। तीनों मित्र फिर हँसी–खुशी से दिन बिताने लगे।

रोचक प्रेरक–प्रसंग : अर्चना जैन

बुद्धि का कमाल

जापान में साबुन बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी को अपने एक ग्राहक से यह शिकायत मिली कि उसने साबुन का 'व्होल सेल पैक' खरीदा था पर उनमें से एक डिब्बा खाली निकला। कंपनी के अधिकारियों को जांच करने पर यह विदित हुआ कि असेम्बली लाईन में ही किसी गड़बड़ के कारण साबुन के कई डिब्बे भरे जाने से चुक गये थे।

कंपनी ने एक कुशल इंजीनियर को रोज पैक हो रहे हजारों डिब्बों में से खाली रह गये डिब्बों का पता लगाने के लिए तरीका ढूंढने के लिए निर्देश दिया। कुछ सोच-विचार करने के बाद इंजीनियर ने 'असेम्बली लाईन' पर एक हाई रिजोल्यूशन एक्स-रे मशीन लगाने के लिए कहा जिसे दो-तीन कारीगर मिलकर चलाते और एक आदमी मॉनीटर की स्क्रीन पर निकलते जा रहे डिब्बों पर नजर गड़ाए देखता रहता ताकि कोई खाली डिब्बा बड़े-बड़े बक्सों में नहीं चला जाए। उन्होंने ऐसी मशीन लगा भी ली पर सब कुछ इतनी तेजी से होता था कि वे भरसक प्रयास करने के बाद भी खाली डिब्बों का पता नहीं लगा पा रहे थे।

ऐसे में एक अदने से कारीगर ने कंपनी अधिकारियों को असेम्बली लाईन पर एक बड़ा-सा इंडस्ट्रियल पंखा लगाने के लिए कहा। जब फरफराते हुए पंखे के सामने से हर मिनट साबुन के सैकड़ों डिब्बे गुजरते तो उनमें मौजूद खाली डिब्बे उड़कर दूर चले जाते। इस तरह सभी की मुश्किलें पल भर में आसान हो गईं।

कविता : नवीन चतुर्वेदी

आगे ही बढ़ते जाएंगे

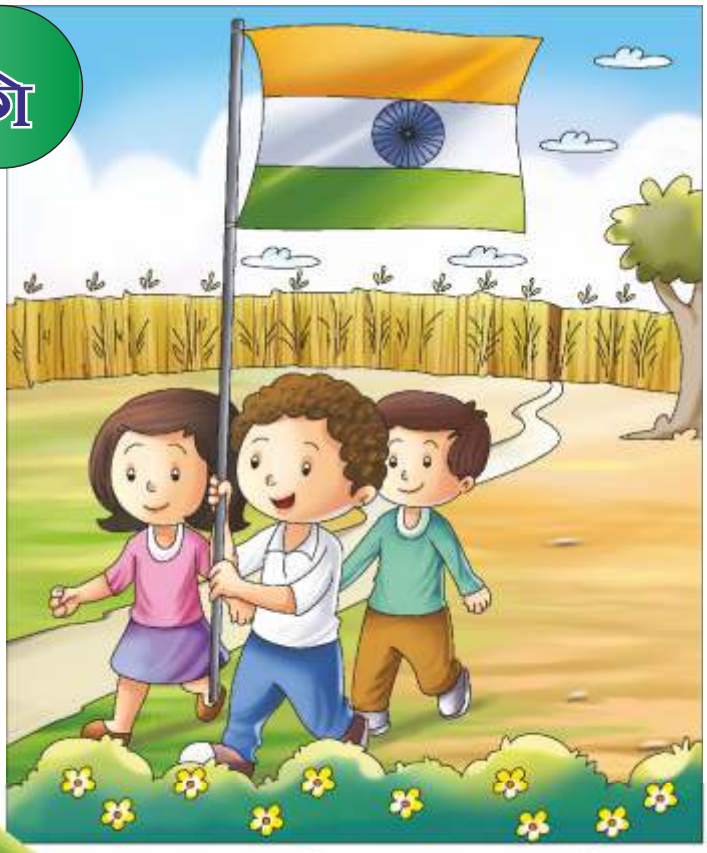

भले अभी हम बच्चे हैं,
लेकिन मन के सच्चे हैं।
हम सब कदम मिलाएंगे,
आगे ही बढ़ते जाएंगे।

आंधी हमें न रोकेंगीं,
नदियां हमें न टोकेंगीं।
लिए तिरंगा हाथ में,
सब बच्चों के साथ में।
जन–गण–मन हम गाएंगे,
भारत मजबूत बनाएंगे।

हरे–भरे हैं खेत हमारे,
बाग हमारे प्यारे–प्यारे।
फूल खिले हैं डाली–डाली,
हम सब इसके प्यारे माली।

सबको सुखी बनाएंगे,
कलियों से मुस्काएंगे।

चंदा आता हमें सुलाने,
सूरज आता हमें जगाने।
खिड़की में आकर चिड़िया,
कहती अब उठ जा गुड़िया।
माखन–मिश्री खाएंगे,
फिर हम पढ़ने जाएंगे।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

कभी न भूलो

- पछताना हृदय की वेदना है और निर्मलता जीवन का उदय। — शेक्सपियर
- जो व्यक्ति निश्चय कर सकता है उसके लिए कुछ भी असम्भव नही। — इमर्सन
- ग्रंथ ऐसे शिक्षक हैं जो बिना बेंत मारें, बिना कटु शब्द और क्रोध के, बिना हमसे कुछ लिए हमें शिक्षा देते हैं। — रिचर्ड डीबरी
- अहिंसा का अर्थ है, ईश्वर पर भरोसा करना।
- प्रेम ही अहिंसा का परम रूप है। — महात्मा गाँधी
- मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।— रीमो
- अन्तिम विजय 'अहिंसा' की ही होती है। — महात्मा बुद्ध
- अहिंसा सबसे बड़ा पुण्य है। — महात्मा तुलसीदास
- अहिंसा धर्म का लक्षण है। — चाणक्य
- जीवन जीने से कोई भी बूढ़ा नहीं होता, वह बूढ़ा होता है जीवन के प्रति अरुचि
- रखने से। — मेरी वेनान रे
- ईश्वर की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा अभिमान है। — शिलर
- महान कार्यों के लिए पहली जरूरत है—आत्म—विश्वास। — जॉनसन
- प्रत्येक कार्य पहले असम्भव नजर आता है। — कार्लाईल
- तीन चीजों को कभी छोटा मत समझो— शत्रु, कर्जा, बीमारी।
- नेक बनने में तो सारी उम्र लग जाती है। बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता। — अज्ञात
- मित्र पाने का एक ही मार्ग है, स्वयं किसी का मित्र बन जाना।
- गुणों के समूह में एक दोष वैसे ही छिप जाता है, जैसे चाँद की किरणों में कलंक। — कालीदास
- हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पांऊ फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। — वाल्तेयर

बाल कविता : मीनू सिंह

आई है प्यारी होली

प्यार सिखाने प्यार लुटाने,
आई है प्यारी होली।

मन से ईर्ष्या बैर निकालो,
द्वेष–भाव को कभी न पालो।
जाति–पांति का भेद मिटाने,
आई है फिर से होली।।

ढोल मजीरा खूब बजाते,
गली–गली हुड़दंग मचाते।
शोर–शराबा, धमा–चौकड़ी,
लेकर आई है होली।।

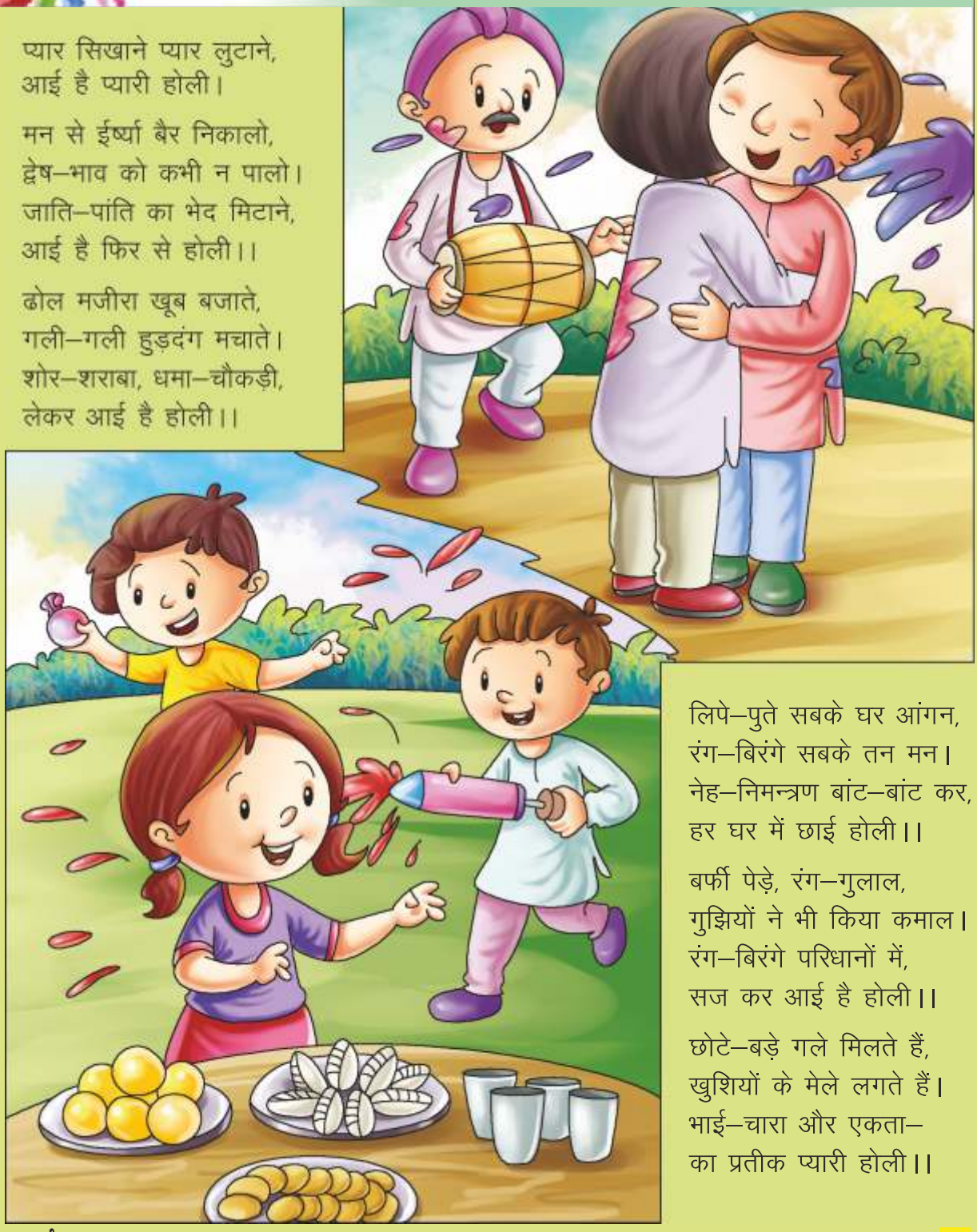

लिपे–पुते सबके घर आंगन,
रंग–बिरंगे सबके तन मन।
नेह–निमन्त्रण बांट–बांट कर,
हर घर में छाई होली।।

बर्फी पेड़े, रंग–गुलाल,
गुझियों ने भी किया कमाल।
रंग–बिरंगे परिधानों में,
सज कर आई है होली।।

छोटे–बड़े गले मिलते हैं,
खुशियों के मेले लगते हैं।
भाई–चारा और एकता–
का प्रतीक प्यारी होली।।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

एक व्यापारी था। वह बहुत ही लालची था। उसे जो कुछ भी मिलता, उसे वह अपनी तिजोरी में रख लेता।

एक बार वह व्यापार के सिलसिले में उगाही कर लौट रहा था। अचानक उसके हाथों से उसकी थैली गिर गई। उसमें तीस सोने के सिक्के थे।

वह थैली अचानक ही मुखिया की बेटी को मिल गई।
वह गाँव के मुखिया के घर गया और उसे थैली खोने के बारे में बताया। मुखिया ईमानदार व दयालु था।
मुखिया ने थैली खोलकर सिक्के गिने तो उसमें तीस सिक्के थे।
मुखिया ने वह थैली व्यापारी को सौंप दी। व्यापारी ने थैली खोली और सिक्के गिनने लगा।

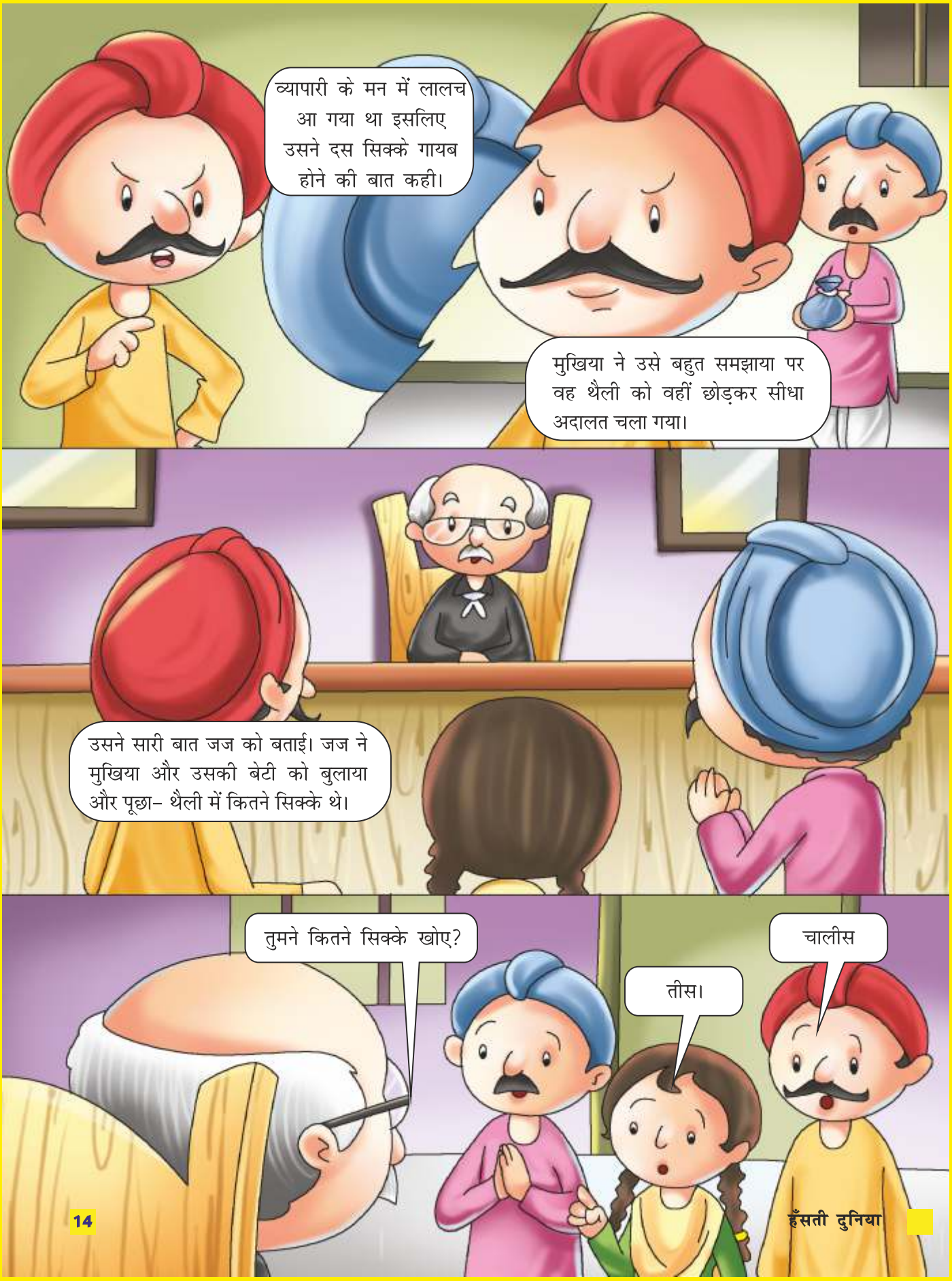
व्यापारी के मन में लालच आ गया था इसलिए उसने दस सिक्के गायब होने की बात कही।
मुखिया ने उसे बहुत समझाया पर वह थैली को वहीं छोड़कर सीधा अदालत चला गया।
उसने सारी बात जज को बताई। जज ने मुखिया और उसकी बेटी को बुलाया और पूछा– थैली में कितने सिक्के थे।
तुमने कितने सिक्के खोए?
तीस।
चालीस

तो इसका मतलब यह है कि यह थैली तुम्हारी नहीं है। ये थैली इसी लड़की के पास रहेगी जब तक इसका असली मालिक न मिल जाए।
और अगर कोई चालीस सिक्कों की थैली आएगी तो मैं तम्हें बुलवा लूँगा।
अब व्यापारी को अपने झूठ पर पछतावा होने लगा और वह चिल्ला उठा– नहीं, नहीं मेरे तो तीस सिक्के ही खोए थे।
पर जज ने उसकी एक न सुनी और अदालत से बाहर निकाल दिया।
इस तरह 'लालच का अंत बुरा ही होता है।'

समाचार

मंगल पर भारी बर्फ के ग्लेशियर

लंदन। वैज्ञानिकों ने कहा है कि मंगल पर 150 अरब घन मीटर से अधिक बर्फ के ग्लेशियर हैं जो इस लाल ग्रह की पूरी सतह को बर्फ की एक मीटर से भी अधिक मोटी परत से ढकने के लिए पर्याप्त हैं।

ग्लेशियरों को धूल की एक मोटी परत ने ढका हुआ है जिससे वे वहाँ की जमीन की सतह की तरह ही नजर आते हैं लेकिन राडार मापन से यह पता चलता है कि धूल के नीचे बर्फ के रूप में ग्लेशियर हैं। पहले वैज्ञानिक यह नहीं जानते थे कि यह बर्फ पानी के (H_2O) जमने से बनी है या कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) से या क्या यह मिट्टी है।

'नासा' के उपग्रह और 'मार्स रीकानिसन्स आर्बिटर' के राडार मापन का उपयोग कर और बर्फ के प्रवाह से उन्हें जोड़कर देखने के बाद शोधकर्ता यह निर्धारित करने में सक्षम हुए हैं कि यह पानी से बनी बर्फ है। 'कोपहनहेगन यूनीवर्सिटी' में नील्स बोर इंस्टीट्यूट के नन्ना बी कार्लसन ने बताया, हमने बर्फ की गतिविधियों और उसकी पर्त की मोटाई का अंदाजा लगाने के लिए 10 साल पहले के राडार मापन पर गौर किया। एक ग्लेशियर कुल मिलाकर बर्फ का एक विशालकाय टुकड़ा होता है। यह तैरता है और एक आकार धारण करता है जो हमें इसके नरम होने के बारे में बताता है। इसके बाद हम इसकी तुलना पृथ्वी पर मौजूद ग्लेशियरों के व्यवहार से करते हैं और उससे हम बर्फ के प्रवाह को समझ पाने में सक्षम होते हैं।

ये ग्लेशियर मंगल पर 300 से 500 अक्षांश के बीच स्थित हैं। वे उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों में पाए जाते हैं। कार्लसन ने बताया, हमने हिसाब लगाया है कि ग्लेशियर में बर्फ 150 अरब घन मीटर बर्फ से अधिक है। यह मंगल की पूरी सतह को 1.1 मीटर बर्फ की चादर से ढक सकती है। मंगल पर वायुमंडलीय दबाव इतना कम है कि पानी से बनी बर्फ आसानी से वाष्पीकृत होकर वाष्प बन जाती है। लेकिन ग्लेशियर धूल की मोटी परत के नीचे अच्छी तरह से सुरक्षित हैं। (भाषा)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

छाता

बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

बरसात हो रही थी। दादाजी किसी काम से बाहर गये हुए थे। रविवार होने के कारण सभी बच्चे उनके आने का बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। उन्हें दादाजी से आज कहानी जो सुननी थी।

थोड़ी देर बाद दादाजी दूर से ही आते हुए दिख पड़े। बरसात से बचने के लिए वह छाता ताने हुए थे। ज्यों ही वह घर में घुसे, बच्चों ने एक स्वर से कहा, ''हम लोग कब से आपका इन्तजार कर रहे हैं, दादा जी।''

''ऐसी क्या बात है?'' दादा जी ने अनजान बनकर बच्चों से पूछा।

''आज रविवार है न!'' वन्दना बोली।

''तो फिर?''

''कायदे और वायदे के अनुसार आज आपको एक कहानी जो सुनानी है।'' मधुलिका ने बात साफ की।

''ओ हो'' दादाजी मुस्कराए, फिर छाता समेट कर उन्होंने एक ओर रखा।

''आज किस चीज की जन्म–कथा सुनाएंगे, दादा जी?'' चन्दन पूछ बैठा।

''तुम्हीं लोग सोचकर कहो।'' दादा जी बोले।

''ऐसा है तो आज छाते की ही जन्म–कथा सुनाइए।'' अर्चना बोली।

''हाँ, हाँ!'' सबने एक साथ हामी भरी।

दादा जी तौलिया से हाथ–मुँह पोंछकर आराम कुर्सी पर जा बैठे। फिर बोले, ''अच्छी बात है, आज छाते की ही जन्म–कथा सुनो।''

''सुनाइए'', चन्दन चहका।

''आज से करीब तीन हजार साल पहले, जैसा कि सुना जाता है चीन में छाते का जन्म हुआ। तुमने 'छत्र' शब्द सुना होगा जरूर।''

''हाँ, हाँ, सुना है।'' सबने एक साथ कहा।

''प्राचीन मिस्र में भी छाते का जिक्र है। मगर उस समय इसका उपयोग धूप या बरसात से बचने के लिए नहीं किया जाता था।'' कहते–कहते दादा जी ठहर गए।

''फिर किसलिए?'' मधुलिका पूछ बैठी।

''उस समय यह छाता नहीं, 'छत्र' कहलाता था, जो सभी के उपयोग के लिए नहीं था। खास किस्म के लोगों के लिए ही था। छत्र दरअसल व्यक्ति की प्रतिष्ठा और उसके सामाजिक स्तर से जुड़ा हुआ था'' कहते–कहते दादा जी फिर रूक गए। मगर तुरंत बोले, ''मिस्र के सम्राट की जो खुदी हुई प्रतिमाएं मिलती हैं, उनमें बड़ा सा छत्र भी दिखाई देता है।''

''हाँ, तो!'' वन्दना ने हुंकारी दी।

''ऐसी धारणा थी कि छत्र के सहारे ही सम्राटों को स्वर्ग की देवियां शक्तियां प्रदान करती थीं,'' दादा जी खांसने लगे। खांसी रूकी तो उन्होंने फिर बोलना शुरू किया, ''पुराने जमाने में चीन में त्यौहारों के अवसर पर लोग जुलूस के आगे छत्र लेकर चला करते थे। वे छत्र सोने के बने होते थे। उनमें हीरे–मोती जड़े रहते थे।''

''बहुत खूब!'' अर्चना चिहुंक उठी।

दादा जी ने कहानी आगे बढ़ायी, ''यही नहीं, पुराने जमाने में तो जापान के सम्राट महल से जब भी बाहर निकला करते, छत्र भी साथ रहा करता। यह छत्र परमसत्ता का प्रतीक माना जाता था। इसका रंग लाल होता था। हमारे देश में भी राजा–महाराजाओं के लिए छत्र हुआ करता था। दरबारियों के लिए भी छत्र होते थे। मगर पद के अनुरूप सबके छत्र अलग–अलग किस्म के हुआ करते थे।''

''मतलब कि प्राचीन काल में छत्र बड़े लोगों के लिए गौरव की बात हुआ करते थे।'' मधुलिका यों ही बोली।

''बिल्कुल,'' दादाजी ने हामी भरी।

''आगे कहिए,'' वन्दना ने रूचि दिखाई।

''राजा–महाराजा और सम्राटों के अलावा हमारे देश में सेनापति के लिए भी छत्र हुआ करता था। इस छत्र का बहुत महत्व था।'' दादाजी ने कहना जारी रखा, "मुख्य रूप से युद्ध के मैदान में जब सेनापति का छत्र नीचे गिर जाता तो उस सेना की हार समझी जाती थी।"

''ऐसी बात थी,'' चन्दन हैरान होकर बोला।

''हाँ,'' दादाजी ने बताया, ''छाते के वर्तमान रूप के बारे में अब सुनो। एक ऐसा भी समय रहा, जब यूरोप में जो पुरुष छाता तानकर घूमा करता, लोग उसे अच्छी नजर से नहीं देखा करते। उस पर व्यंग्य कसा जाता, पुरुष हो तो धूप सहो, बारिश झेलो। छाता लगाकर औरतों की तरह क्यों घूमते–फिरते हो! इस वजह से उस समय छाता ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो सका।

''तो फिर?'' वन्दना ने उत्सुकता दिखाई।

''महिलाएं रंग–बिरंगे छाते का उपयोग करती रहीं। उस समय कपड़े का छाता बनाया जाता,'' दादा जी ने आगे कहा, "सोलहवीं शताब्दी में पादरी जब छाते का उपयोग करने लगे तो इस का महत्व कुछ बढ़ा। मगर पोप ने आम आदमी पर छाते के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया– स्त्री–पुरुष दोनों के लिए।

''इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई?'' चन्दन ने पूछा।

''मगर लंदन की युवतियों ने पोप की इस आज्ञा की अवहेलना कर दी और रंग–बिरंगे छाते का उपयोग खूब शौक से करती रहीं। ये छाते रेशमी और सूती कपड़े के हुआ करते थे।'' दादा जी ने अपनी बात जारी रखी, ''धूप और बरसात से बचने के लिए छाते का उपयोग सबसे पहले यूनानवासियों ने किया। यहाँ की औरतों ने ही इसकी शुरूआत की। फिर यूरोप में इसका प्रचलन हुआ।''

''कहानी खत्म?'' अर्चना यूं ही पूछ बैठी।

''नहीं,'' दादा जी बोले, ''छाते के डिजाइन में समय–समय पर कई सुधार–परिवर्तन होते चले गये। ये सुधार इंगलैंड में किए गये। मोड़ कर रखने वाले हल्के छाते भी वहीं बने। फिर यहीं से सारी दुनिया में छाते फैले। इस तरह इंगलैंड संसार भर में छाते का सबसे बड़ा व्यापारी बन बैठा। और, आज छाता आम लोगों के उपयोग के लिए हो गया।''

कहानी सुनकर बच्चे खूब खुश हुए। वे फिर इधर–उधर खेलने के लिए चल दिए। बारिश थम चुकी थी। दादा जी भी अपने काम में लग गये।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

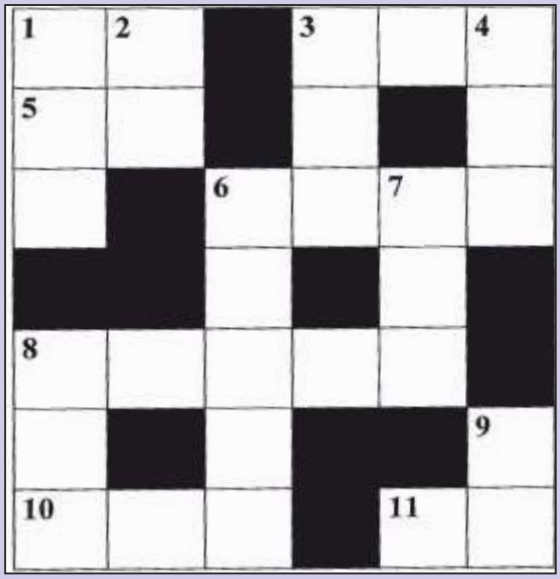

बाएं से दाएं →

1. भरत लक्ष्मण का ..... था।
3. 'भारत रत्न' पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले खिलाड़ी ..... तेंदुलकर हैं।
5. पानी का एक पर्यायवाची शब्द।
6. लेंस जो बीच में पतले होते हैं और किनारों पर मोटे होते हैं, उन्हें ..... लेंस कहते हैं।
8. भारत में सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य .... प्रदेश है।
10. बेमेल शब्द छांटिए : नेपाल, भूटान, काबुल, भारत।
11. वर्ष का छठा महीना।

ऊपर से नीचे ↓

1. भाज्य को ... से भाग देने पर भागफल प्राप्त होता है।
2. इनमें से जो एक मछली है : बाकू, चिली, केन, ईल।
3. हमेशा का एक पर्यायवाची शब्द।
4. प्रतिलिपि का एक पर्यायवाची शब्द (नकल/मीनार)।
6. इटानगर ..... प्रदेश राज्य की राजधानी है।
7. तमिलनाडु में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा।
8. दक्षिण अफ्रीका देश किस महाद्वीप में स्थित है?
9. नाथुला दर्रा भारत और ..... के बीच व्यापार का एक मार्ग है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi-110009
2. Periodicity of Publication :
   Monthly
3. Printer's Name :
   Radhey Shyam
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian

Address :
   Plot No. 102, North Avenue,
   New Delhi-110001

4. Publisher's Name :
   Radhey Shyam
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian

Address :
   Plot No. 102, North Avenue,
   New Delhi- 110001

5. Editor's Name :
   Vimlesh Ahuja
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian

Address :
   H.No. 1/43,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

6. Name & Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.
   Sant Nirankari Mandal,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

I, Radhey Shyam, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 1.3.2016 Radhey Shyam
Publisher

आलेख : दिनेश दर्पण

पौराणिक कहानियों में, होली

होली का पर्व हम प्रतिवर्ष मनाते हैं, और होलिका को फाल्गुन माह में जलाते चले आ रहे हैं। इससे जुड़ी बहुचर्चित भक्त प्रहलाद की कथा तो हम सब जानते ही हैं, पर इस महापर्व से और भी कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं। आओ हम इस बारे में और भी जानकारी प्राप्त करें–

पौराणिक कहानियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध कहानी भक्त प्रहलाद की है जो हमें नृसिंह पुराण में पढ़ने को मिलती है। हिरण्यकश्यपु नाम का एक दैत्य (राक्षस) था। उसने तपस्या करके ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त कर लिया था। उसके बल पर उसने सारी दुनिया को जीतकर देवताओं और ऋषि–मुनियों को सताना शुरू कर दिया। दैत्यराज हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु का परम भक्त था और राम–नाम का भजन कीर्तन किया करता था।

दैत्यराज हिरण्यकश्यपु ने अपने पुत्र पर अनेक अत्याचार किये ताकि वह भक्ति के मार्ग से हट जाए, लेकिन ऐसा हो नहीं सका, और भक्त प्रहलाद भक्ति के मार्ग से पीछे नहीं हटा। वह निरंतर हरि स्मरण करता रहता था।

इसी कहानी के सिलसिले में पद्मपुराण में चिता जलाकर और नारद पुराण में प्रहलाद की बुआ और हिरण्यकश्यपु की बहन होलिका द्वारा प्रहलाद को गोदी में लेकर आग में बैठने का वर्णन है। होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि यदि वह चाहे तो रोज अग्नि स्नान करे तब भी वह नहीं जलेगी, लेकिन अपने भाई हिरण्यकश्यपु की आज्ञा से जब वह विशाल जलती हुई चिता में प्रहलाद को गोद में लेकर बैठी तो जलकर भस्म हो गई और प्रहलाद सकुशल चिता से बाहर आ गया। यह देखकर हिरण्यकश्यपु आगबबूला हो गया, और उसने अपने पुत्र प्रहलाद को मारने के लिए जैसे ही तलवार उठाई तो उसी समय भगवान विष्णु ने नृसिंह अवतार के रूप में प्रकट होकर अपने तीखे–तीखे नाखूनों से हिरण्यकश्यपु का पेट फाड़कर उसका वध कर दिया। तभी से दुष्ट दैत्य हिरण्यकश्यपु और होलिका के नष्ट होने के रूप में होलिका दहन प्रतिवर्ष सर्वत्र मनाया जाता है।

होलिका दहन से संबंधित एक कहानी भागवत पुराण में है। द्वापर युग में मथुरा नगरी में एक कंस नाम का राजा था। उसने अपने भान्जे बालक कृष्ण को जान से मारने के लिए पूतना नाम की राक्षसी को भेजा। पूतना अपनी माया से अपना वेश बदलकर गोकुल में नंदराज के भवन में गई। वह इधर–उधर की बातें करते हुए माता यशोदा के पास जा पहुँची और बातें करते–करते उसने यशोदा से बालक कृष्ण को अपनी गोद में ले लिया और खिलाने लगी। फिर सबकी नजरों से बचाकर उसे एक तरफ ले गई और अपने जहर–बुझे स्तन से दूध पिलाने लगी। बालक कृष्ण उसके मन की बात को जान गये। फिर उन्होंने पूतना के स्तन से सारा दूध पी लेने के बाद भी जब उसका स्तन नहीं छोड़ा तो उसे भयंकर पीड़ा होने लगी। वह अपने असली रूप में आ गई और कुछ देर तड़पने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मौत पर गोकुलवासियों को बहुत खुशी हुई। उन लोगों ने रात में ही पूतना का शव जला दिया और इसी खुशी की स्मृति स्वरूप प्रतिवर्ष फाल्गुन माह की शुक्ल पूर्णिमा के दिन होली जलाने लगे।

पहेलियां

प्रस्तुति : पंकज कुमार निरंकारी (औरंगाबाद),
–अतुल निरंकारी (रामनगर)

1. हरी–हरी है कोठी भारी,
उजली–उजली धरती।
लाल–लाल है बिस्तर पर,
काली मछली सोती।।

2. गोल–गोल से छोटे फल हम,
जो भी खाएं वो माने।
खाने लगो ढ़ेर से खा जाओ,
स्वाद बस लोमड़ी जाने।।

3. आता है तो पुष्प खिलाता,
पक्षी गाते गाना।
सभी को जीवन देता है,
पर उसके पास नहीं जाना।।

4. उड़ नहीं सकती मैं वायु में,
चल नहीं पाती सड़कों पर।
लेकिन मैं लाखों लोगों को,
पहुँचाती जाती हूँ इधर–उधर।।

5. पूरे विश्व पर तना हुआ है,
ना आधार है ना खंभा।
थाम कर सितारों को बैठा है,
होता है बड़ा अचम्भा।।

6. हर भवन से मैं नजर हूँ आता,
सब बच्चों को खूब हूँ भाता।
दूर का हूँ लगता मामा,
रूप बदलता पर दिल को भाता।।

7. फटा पेट तथा उभरे होंठ,
पानी में पाया जाऊं।
तेज आवाज विष्णु जी धारें,
पूजा स्थल पर ही पाऊं।।

8. बिना पांव पानी पर चलती,
बत्तख नहीं न पानी की रानी।
उसे न चाहिए सड़क अथवा पटरी,
सिर्फ चाहिए गहरा पानी।।

9. नाम बताओ उस फल का,
जो जाड़े में ज्यादा आता है।
छिलका, बीज, गूदा सब
इस फल का खाया जाता है।।

10. उस मछली का नाम बताओ,
जो घोंसला बनाती है।
जो खारे पानी की झीलों में,
बहुधा पाई जाती है।।

11. अगर देखना है भारत तो
बैठ रेल में जाओ।
सबसे लम्बा प्लेटफार्म है
कहाँ तुम बतलाओ।।

12 कहाँ गोल गुम्बद स्थित है,
बच्चों हमें बताओ।
आज पहेली बस इतनी ही,
अब अपने घर जाओ।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

होली जलाने से संबंधित एक कहानी और भी हमें पुराण में पढ़ने को मिलती है। वैदिक काल में एक होलिका नाम की राक्षसी थी। वह लोगों को बहुत सताती थी। उसके अत्याचार दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे थे। लोग हैरान परेशान थे। जब लोगों की सहनशक्ति समाप्त हो गई तो उसे लोगों ने घेरकर पकड़ लिया और रात में ही उसे जला दिया गया। उस दिन भी फाल्गुन मास की शुक्ल पूर्णिमा थी। इस तरह होलिकोत्सव का पर्व कई कहानियों से जुड़ा हुआ है।

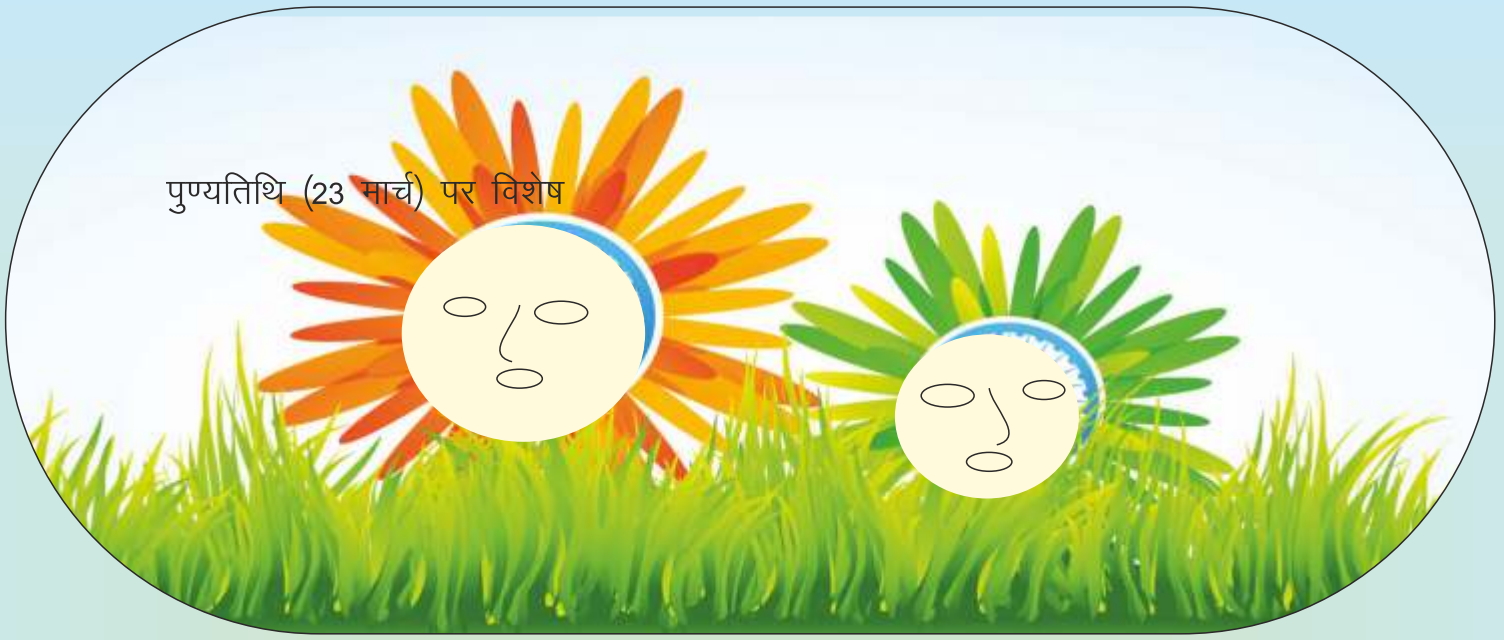

पुण्यतिथि (23 मार्च) पर विशेष

बाल कविता : हरजीत निषाद

निडर थे भगत सिंह

हँसते हँसते शूली पर चढ़ने वाले।
नज़र नहीं आते अब वैसे मतवाले।
स्वतंत्रता संग्राम के सच्चे सेनानी,
भगत सिंह थे फौलादी सीने वाले।

फिरंगियों से ऐसा जम कर युद्ध हुआ।
राजगुरु सुखदेव का सच्चा संग हुआ।
संसद में बम फेंक डरे न भागे वो,
देख वीरता उनकी दुश्मन दंग हुआ।

खुला किया विद्रोह ब्रिटिश साम्राज्य हिला।
आजादी की घुट्टी सबको दिया पिला।
युवकों के आदर्श निडर थे भगत सिंह,
सांडर्स को मारा गोरों को सबक मिला।

देश है अब आजाद स्वतंत्रता दिवस मनाएं।
वीर शहीदों को पर न कभी भुलाएं।
कायम रखना आजादी को हर कीमत पर,
प्रण कर लें जीवन भर ऐसा हम कर पायें।

बाल गीत : राजेंद्र निशेश

आई है भइया होली रे!

हल्ला–गुल्ला शोर मचाती
रंगों की बौछारें लाती
आई है भइया होली रे!

आओ रामू आओ श्यामू,
खूब मज़े से गाओ मिलकर,
रंग उड़ाओ गले लगाओ,
सबको तुम अपनाओ मिलकर।

वैर–द्वेष का भाव मिटाती,
खुशियों की सौगातें लाती,
आई है भइया होली रे!

कीचड़ मत फेंको तुम भाई,
अच्छे बच्चे तुम सारे हो,
नन्हें–मुन्ने थोड़े नटखट।
माँ की आँखों के तारे हो।

मीठे–मीठे सपन जगाती,
सब के मन को ये भा जाती,
आई है भइया होली रे!

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

खुशियों का संसार होली

रंगीला है त्यौहार होली,
खुशियों का संसार होली।
ऐसी सजी धजी आती है,
ज्यों फूलों की क्यार होली।
आयी धरती को पहनाने,
एकता के ले हार होली।
लिए पिचकारी और गुलाल,
सबको रही पुकार होली।
गरमी की आहट के साथ,
लेकर आयी प्यार होली।
फागुन की ये ऋतु सुहानी,
मौसम का है शृंगार होली।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

फूल बोला

सोहन का पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। छुट्टियों का तो वह बेसबरी से इंतजार करता था। कभी मौसी के घर तो कभी ननिहाल। और नहीं तो चाचा के घर चला जाता जहाँ वह अपने चचेरे भाई राहुल से घण्टों भर कार्टून देखता रहता। पिछली बार उसकी पांचवीं कक्षा की परीक्षा का परिणाम आया था तो मुश्किल से पास होने के लायक नंबर आए थे उसके। मम्मी–पापा उसकी ट्यूशन रखवाने की बात करते तो वह आनाकानी करने लगता। वह सोचता था कि ट्यूशन दो घण्टे की गुलामी है। अध्यापक जी उसकी पढ़ाई में रुचि न देखकर पूछते, ''तुम्हारा ऐसा ही हाल रहा तो बी.ए. एम.ए. तक कैसे पहुँचोगे?'' कई बार सोहन मोहन के बारे में सोचता जो पढ़ने में काफी तेज था। वह उसका पड़ोसी भी था और दोस्त भी। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे लेकिन अलग–अलग सैक्शनों में।

उनके स्कूल में एक बगीची थी। बगीची में गेंदा, गुलाब, चम्पा, चमेली और जूही के फूलों की महक स्कूल के वातावरण को महकाती रहती थी। स्कूल का माली था श्रवण। वह बगीची का पूरा ध्यान रखता था। फिर भी माली से आंख बचाकर सोहन फूल तोड़ कर अपनी जेब में डाल लेता और फिर उस फूल की पत्तियां तोड़ कर अपनी कापियों और किताबों में रख लेता था। ऐसा करने पर वह सोचता था कि विद्या की देवी सरस्वती उस पर खुश होगी और उसे विद्या का दान प्राप्त होगा। वह 'इंटेलीजेंट' बन जायेगा। एक दो बार फूल तोड़ते हुए पकड़े जाने पर वह माली से डांट

भी खा चुका था। प्रिंसीपल साहब से उसकी शिकायत भी हो चुकी थी लेकिन अपनी आदत से बाज नहीं आ रहा था।

एक दिन माली श्रवण छुट्टी पर था। आधी छुट्टी का समय था। सोहन घूमता हुआ बगीची की तरफ आया। गुलाब के महकते एक बड़े फूल पर उसकी नजर पड़ी। उसने तत्काल उस फूल को तोड़ लिया। फूल को अपनी जेब में डालकर वह कमरे में आया। उसने कापियों किताबों में पड़ी पुरानी फूल–पत्तियों को निकाल कर फेंक दिया और नये फूल की पत्तियों को उनके स्थान पर रखने लगा। इतने में पुस्तकालय में कोई पत्रिका पढ़कर मोहन भी उसके कक्षा–कमरे में आ गया। जब उसने सोहन को ऐसा करते देखा तो उसने पूछा, ''ये क्या कर रहे हो सोहन?''

''आपको नहीं पता?''

''नहीं तो।''

''धत् तेरे की! अरे बुद्धू, ये भी नहीं जानते कि किताबों–कापियों में फूल रखने से पढ़ाई आती है।''

''पढ़ाई?'' यह सुनकर मोहन हँस पड़ा। बोला, ''बुद्धू मैं नहीं, तुम हो। क्या कभी ऐसा करने से पढ़ाई आती है?'' पढ़ाई केवल मेहनत और लगन से ही आती है। जी चुराने से नहीं। यदि ऐसा होने लगा तो हमारी कक्षा के सभी कमजोर छात्रों की कापियां किताबें फूल–पत्तियों से भरी रहें। यह तुम्हारे मन का केवल वहम् है। तुमने बगीची के बाहर लिखी तख्ती नहीं पढ़ी कि 'फूल तोड़ना पाप है।'

''पाप? अरे पाप नहीं, किताबों में फूल रखना शुभ होता है। ऐसा पुण्य का कार्य करने से दिमाग चलने लगता है। चलो छोडो इस बात को बस यूं

समझ लीजिए कि मुझे फूल अच्छे लगते हैं।'' सोहन बोला।

''तुम्हें फूल अच्छे लगते होते तो तुम इन्हें तोड़ते नहीं।''

''फिर क्या हुआ यार? फूल तोड़ने के लिए ही तो होते हैं। श्रवण माली हर रोज फूल तोड़कर प्रिंसीपल साहब के लिए गुलदस्ता सजाता है। गुलदस्ते में पड़े फूल कितने सुंदर लगते हैं। दिनेश सर अपने कोट पर फूल तोड़ कर लगाते हैं। और जब किसी मंत्री जी के गले में फूलों की माला डाल कर उनका हार्दिक अभिनन्दन..... ।''

''बस बस। आगे कुछ मत कहना। तुम्हें प्रकृति की कोमलता का अहसास नहीं है। जब कोई भी बगीची या फूलवाड़ी से गुजरता है तो ये फूल अपनी खुश्बू से उसका स्वागत् करते हैं। इनसे वातावरण सुगन्धित रहता है। आज के प्रदूषण भरे माहौल में तो इनका और भी ज्यादा महत्व है।''

''अरे छोड़ो मोहन। तुम तो फूलों के बहाने मेरे पीछे ही पड़ गए हो। कोई और बात सुनाओ। चलो बताओ रात देखा था सीरियल हैरी पॉर्टर?'' सोहन ने कहा।

लेकिन मोहन ने उसे कोई जवाब न दिया। ऐसे लगा जैसे मोहन उससे नाराज हो गया था।

छुट्टी होने पर दोनों अपने अपने घर आ गए।

रात को सोहन को सपना आया। सपना भी अजीब था।

सपने में सोहन को लगा जैसे वह एक ऐसी सुनसान जगह पर आ गया है जहाँ कोई पेड़–पौधा नहीं है। प्रदूषण के कारण उसे सांस लेने में बहुत दिक्कत आ रही है। उसे महसूस होने लगा जैसे उसकी सांस ही बंद हो जायेगी और फिर वह कैसे जीयेगा?

सोहन उधेड़बुन में एक बड़े पत्थर पर बैठा सोच रहा था। अचानक उसने देखा जैसे उसके सामने एक आकृति बन रही हो। देखते ही देखते वह आकृति गुलाब के फूल में परिवर्तित हो गई।

''हैं? गुलाब का फूल?''

''हाँ हाँ मैं वही गुलाब का फूल हूँ जिसकी पत्तियां तोड़ कर तुमने अपनी किताबों–कापियों में रखी थी। मैं तो तुम से सवाल पूछने आया हूँ।''

सोहन एकदम भौचक्का सा रह गया। बोला, ''मुझ से सवाल? कौन से सवाल?''

गुलाब का फूल बोला, ''मेरा पहला सवाल यह है कि क्या तुम्हें प्रकृति अच्छी नहीं लगती?''

''प्रकृति? हाँ हाँ प्रकृति तो अच्छी लगती है।''

''फिर बताओ कि क्या मैं प्रकृति का हिस्सा नहीं हूँ?''

सोहन ने झट जवाब दिया, ''तुम प्रकृति का हिस्सा हो। इसमें कोई संदेह नहीं।''

''तो फिर तुमने मुझे क्यों तोड़ा?''

''ताकि मैं तुम्हारी पत्तियों को अपनी कापियों–किताबों में रख सकूं।''

यह सुनकर गुलाब का फूल हँस पड़ा।

सोहन को उसकी हँसी बहुत अजीब सी लगी।

फूल बोला, ''तुमने मेरी पत्तियों को अपनी किताबों–कापियों में रखा। लेकिन क्यों? मैं यह जानना चाहता हूँ?''

''इसलिए ताकि मैं पढ़ाई में होशियार हो सकूं। मैंने सुना है कि फूल तोड़ कर उसकी पत्तियों को या मोर–पंखों को किताबों में रखने से पढ़ाई आती है। मोर–पंख तो मुझे मिले नहीं, इसलिए फूल ही.... ।''

गुलाब का फूल पहले तो चुप रहा। फिर बोला, ''मेरी एक बात याद रखो। कभी भी फूल पत्तियों या मोर–पंखों को अपनी किताबों में रखने से पढ़ाई नहीं आती। यदि तुम सचमुच ही पढ़ाई में आगे बढ़ना चाहते हो तो मैं तुम्हें एक जादू दे सकता हूँ।''

''जादू?'' सोहन एकदम चहक कर बोला, ''हाँ हाँ, मुझे ऐसा जादू चाहिए। कौन सा जादू है वह? कहाँ से मिलेगा? मैं हर हालत में उसे पाना चाहता हूँ।''

फूल ने कहा, ''वो तुम्हारे पास है।''

''मेरे पास?'' सोहन ने एकदम अपने हाथों की तरफ देखा। फिर उसका हाथ अपनी जेब पर गया, ''नहीं। मेरे पास तो कोई ऐसा जादू नहीं।''

फूल की पत्तियां खिलखिला कर हँस पड़ीं। फूल फिर बोला, ''अरे पगले, मेरी बात को ध्यान से सुनो। वो जादू तुम्हारी जेब में नहीं। वो जादू तो तुम्हारी किताबों में ही छुपा पड़ा है। अब इस जादू की तलाश करनी कैसे है, यह तुमने देखना है। हाँ, मैं दावे से कह सकता हूँ कि यदि तुमने उसे ढूंढ़ लिया तो तुम शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे निकल जाओगे। अब मैं तुम्हें फिर किसी दिन मिलूंगा।''

तभी अचानक गुलाब के फूल की पत्तियां एक एक सिंकुड़ती रही और फूल गायब हो गया।

तभी अचानक सोहन के कानों में एक आवाज पड़ी, ''उठो बेटा, स्कूल नहीं जाना क्या?''

एकदम आंखें मलता हुआ सोहन उठा। उसने देखा, मम्मी उसके सिर पर हाथ फेरती हुई जगा रही थी। सोहन उठा। सबसे पहले वह सैर के लिए निकला। फिर स्नान करके नाश्ता लेने के उपरान्त वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया। उसके दिमाग में बार बार सपने वाले फूल की बात

ही घूम रही थी, ''मेरी बात को ध्यान से सुनो। वो जादू तुम्हारी जेब में नहीं। वो जादू तो तुम्हारी किताबों में ही छुपा पड़ा है। अब इस जादू की तलाश कैसे करनी है? यह तुमने देखना है। हाँ, मैं दावे से कह सकता हूँ कि यदि तुमने उस जादू को पा लिया तो तुम शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे निकल जाओगे।''

सोहन ने स्कूल में जाकर कापियों–किताबों का एक–एक पन्ना खोलकर देखा। लेकिन उसे जादू नहीं मिला।

''जादू को पाने का भी ढंग होता है। और वह जादू है मेहनत, लगन और अनुशासन।'' सोहन के मन के किसी कोने से आवाज आई।

धीरे–धीरे बात उसकी समझ में आने लगी। उसने समय–सारणी तैयार की और उसके अनुसार वह पढ़ने लगा। अब उसने अपने खाली समय का दुरुपयोग करना छोड़ दिया था। खेल के लिए भी उसने अपना समय निश्चित कर लिया था।

दिन गुजरने लगे। उसकी पढ़ाई में दिलचस्पी देखकर मम्मी पापा से उसे शाबाशी मिलने लगी।

इस बार वार्षिक परीक्षा हुई तो सोहन की प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं था।

''मम्मी, अब देखना मेरा परिणाम कैसा रहेगा?''

सचमुच जिस दिन उसकी परीक्षा का परिणाम निकला, वह तीसरे स्थान पर आया।

परिणाम सुनने के बाद जब सभी बच्चे अपने अपने घर आ रहे थे तो सहसा ही स्कूल की बगीची के पास गुलाब के एक फूल ने जैसे उसकी राह रोक ली हो।

सोहन गुलाब के फूल के पास आया। वह उसे निहारने लगा। उसे लगा, यह वही सपने वाला फूल था।

''मैंने जादू ढूंढ़ लिया है।'' सोहन बोला।

तभी अचानक पीछे से आवाज आई, ''और उस जादू का नाम है सच्ची मेहनत और अनुशासन।''

सोहन ने पीछे मुड़कर देखा, मोहन था।

दोनों ने एक दूसरे को बगल में ले लिया।

गुलाब का फूल महकता हुआ झूमने लगा।

सोहन को लगा जैसे फूल पूछ रहा हो, ''अब तो मुझे तोड़कर किताबों में नहीं रखोगे?''

सोहन ने कुछ दूर पड़ी कंटीली झाड़ियों को देखा। फिर उन्हें उठाकर गुलाब के पौधे के इर्द गिर्द रख दिया ताकि गुलाब का फूल सुरक्षित रह सके।

मोहन ने महसूस किया जैसे सोहन और गुलाब का फूल दोनों एक दूसरे का धन्यवाद कर रहे हों।

●●●

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

उड़ीसा का राज्यपशु : सांभर

सांभर दक्षिणी–पूर्वी एशिया में पाया जाने वाला एक अभिनव हिरन है। यह भारत, नेपाल, बर्मा, बांग्लादेश, श्रीलंका, मलाया, सुमात्रा, बोर्नियो, फिलीपाइन्स, इन्डोनेशिया तथा दक्षिणी चीन के बहुत बड़े भाग में देखन को मिलता है, किन्तु पाकिस्तान में सांभर नहीं मिलता। अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय सांभर को एशिया से न्यूजीलैंड के उत्तरी भाग में ले जाया गया था, जहाँ अच्छी तरह फल–फूल रहा है।

सांभर भारत में पाये जाने वाले हिरनों में सबसे बड़ा है। इसकी कंधों तक ऊँचाई 150 सेन्टीमीटर तक होती है। यह पंजाब को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। इसे हिमालय पर्वत के साढ़े तीन हजार मीटर तक की ऊँचाई वाले पर्वतीय वनों में सरलता से देखा जा सकता है। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में यह जड़ाऊ के नाम से जाना जाता है। किसी समय मध्य भारत में बहुत बड़ी संख्या में सांभर पाये जाते थे, किन्तु जंगलों की अन्धाधुंध कटाई और शिकार के कारण इसकी अनेक जातियाँ पूरी तरह विलुप्त हो चुकी हैं और कुछ विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी हैं।

सांभर की तीन प्रमुख जातियाँ एवं सोलह उपजातियाँ हैं। इन सभी की शारीरिक संरचना, मृगशृंग (एन्टलर्स, सींग) की संरचना एवं आकार में पर्याप्त अन्तर होता है। सांभर की तीन प्रमुख जातियाँ ये हैं– भारतीय सांभर, सुण्डा सांभर और फिलीपाइन्स का सांभर। इनमें भारतीय सांभर सबसे बड़ा और भारी होता है तथा यह भारत एवं एशिया के सर्वाधिक क्षेत्रों में फैला हुआ है। इसके मृगशृंग भी सबसे सुन्दर होते हैं। भारत में सांभर की छः उपजातियाँ पायी जाती हैं। इनमें मध्य प्रदेश के नर्मदा और ताप्ती के जंगलों का सांभर सबसे बड़ा और सुन्दर होता है। दक्षिण भारत का सांभर सबसे छोटा होता है, किन्तु सुन्दरता में यह मध्य प्रदेश के सांभर से कम नहीं होता।

सांभर के पैर लम्बे और मजबूत होते हैं एवं इसके खुरों की संरचना इस प्रकार होती है कि इसके चलने की आवाज नहीं होती। इसकी पूँछ मोटी एवं मध्यम आकार की तथा बालयुक्त होती है। सांभर का सिर सामान्य होता है तथा सिर की तुलना में कान बड़े और चौड़े होते हैं। इसकी दृष्टि साधारण होती है, किन्तु घ्राणशक्ति एवं श्रवणशक्ति बहुत तेज होती है। अपनी घ्राणशक्ति और श्रवणशक्ति के बल पर यह खतरा निकट होने पर अपने बचाव के लिये उसकी स्थिति मालूम कर लेता है और सतर्क हो जाता है।

मादा सांभर का आकार नर से छोटा होता है। इसके न तो मृगशृंग होते हैं और न ही गर्दन पर बालों की अयाल। इसके शरीर का रंग भी नर से हल्का होता है।

सांभर के मृगशृंग अन्य हिरनों की तुलना में काफी बड़े और शानदार होते हैं। इन्हीं मृगशृंगों के लिये इसका इतना अधिक शिकार किया गया है कि यह विलुप्ति के कगार पर पहुँच गया है। नर सांभर के तीन–तीन भागों वाले दो बड़े मृगशृंग होते हैं जो चार वर्ष की आयु से निकलना आरम्भ होते हैं। इन मृगशृंगों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि ये प्रतिवर्ष गिर जाते हैं, किन्तु कभी–कभी दो वर्षों में गिरते हैं। सांभर के मृगशृंग फैले हुए, मोटे तथा मजबूत होते हैं। इसके दोनों मृगशृंगों की शाखाएं तो समान होती हैं, किन्तु इनका विकास एक जैसा नहीं होता।

सांभर के मृगशृंग आरम्भ में कोमल और कमजोर होते हैं, किन्तु परिपक्व होने पर मजबूत और कठोर हो जाते हैं। यह प्रायः अपने परिपक्व मृगशृंगों को वृक्षों के तनों से रगड़ कर उन्हें साफ करता रहता है। सांभर के जीवन में इसके मृगशृंगों का विशेष महत्व है। यह इनके द्वारा शत्रुओं से अपनी रक्षा के साथ ही साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों से अपने क्षेत्र की रक्षा भी करता है।

सांभर निशाचर है अर्थात् सूर्यास्त के बाद भोजन की खोज में निकलता है और रातभर विभिन्न प्रकार की घास–फूस, फल–फूल, पत्तियों, वृक्षों की कोपलें तथा कोमल शाखाएं आदि खाता है। यह कभी–कभी दिन के समय भी इधर–उधर घूमते हुए देखने को मिल जाता है। सांभर खेतों के निकट रहना बहुत पसन्द करता है और प्रायः रात्रि के समय खेतों में घुसकर फसलों को काफी नुकसान पहुँचाता है। यह जमीन पर उगी हुई घास तथा छोटे–छोटे पौधे आदि बड़े आराम से चरता है और इसके साथ ही अपने दोनों पैरों पर खड़े होकर ऊँचे–ऊँचे वृक्षों की पत्तियाँ आदि भी खाता है। सांभर पहाड़ी जंगलों, घाटियों, झीलों आदि के निकट रहना पसन्द करता है और पानी के निकट ही अपना निवास बनाता है।

सांभर एक निडर हिरन है, किन्तु हमेशा सतर्क रहता है। यह सियारों और जंगली बिल्लियों पर तो ध्यान ही नहीं देता, किन्तु शेर आदि के निकट होने पर 'पोंक और धेंक' जैसी आवाजें निकालता है। यह खतरे के पास होने का संकेत है। सांभर यदि इस प्रकार की आवाजें रूक–रूक कर तीन बार निकाले तो यह निश्चित हो जाता है कि पास ही कहीं पर शेर है। शिकार की खोज में निकले हिंसक जीव का पता लगते ही यह स्वयं भी सतर्क हो जाता है और अन्य वन्य जीवों को भी सावधान कर देता है।

प्रकृति ने सांभर की सुरक्षा के लिये अनेक उपाय किये हैं। यह एक विशालकाय एवं भारी–भरकम हिरन है, फिर भी इसके पैरों की संरचना इस प्रकार होती है कि इसके चलने से कोई आवाज नहीं होती, जिससे यह हिंसक जीवों से बचा रहता है। सांभर यह जानता है कि भागते समय उसके मृगशृंग झाड़ियों में फंस सकते हैं, अतः वह ऐसी दिशा में भागता है जहाँ मृगशृंग के झाड़ियों में फंसने की आशंका न हो। सांभर पानी पीने के लिए जलस्रोतों के निकट जाते समय भी पूरी तरह सतर्क रहता है, क्योंकि इन स्थानों पर हिंसक जीवों के पाये जाने की सर्वाधिक आशंका रहती है। सांभर के शरीर का रंग भी इसकी सुरक्षा में काफी योग देता है।

सांभर का प्रमुख शत्रु है–शेर। यह सांभर का शिकार प्रायः जलस्रोतों के निकट करता है। शेर सांभर का शिकार करने के लिये सांभर का रास्ता मालूम कर लेता है और रास्ते में किसी गड्ढे में छिप कर बैठ जाता है तथा सांभर के पचास मीटर या इससे भी अधिक निकट आने पर उस पर आक्रमण करके उसे अपना आहार बना लेता है। विख्यात भारतीय जीव वैज्ञानिक कैलाश सांखला के अनुसार– 'शेरों के द्वारा 80 प्रतिशत से अधिक सांभर जलस्रोतों के निकट ही मारे जाते हैं। शेर द्वारा मारे गये सांभरों में सबसे अधिक संख्या मादाओं तथा बच्चों की होती है एवं प्रायः वे ही नर सांभर मारे जाते हैं, जिनके मृगशृंग नहीं होते।

सांभर के दूसरे शत्रु हैं–जंगली कुत्ते। ये झुण्ड बना कर सांभर का पीछा करते हैं और उसे तड़पा–तड़पा कर मारते हैं। सांभर इनसे बचने के लिये मृगशृंगों का उपयोग करता है एवं कभी–कभी पैरों से वार करता है। इसके पैरों की मार इतनी घातक होती है कि कभी–कभी जंगली कुत्ते मर भी जाते हैं, किन्तु झुण्ड में रहने के कारण वे अन्ततः सांभर को मारने में सफल हो जाते हैं।

मादा सांभर का गर्भकाल 5 से 6 माह तक होता है। मादा एक बच्चे को जन्म देती है। इनमें जुड़वा बच्चे होना अपवाद है। मैदानी भागों में मादा अप्रैल–मई में बच्चे को जन्म देती है एवं हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में जुलाई–अगस्त के महीनों में। मादा सांभर हमेशा घनी झाड़ियों के मध्य बच्चे को जन्म देती है तथा हिंसक पशुओं से बचाने के लिये उसे छिपाकर रखती है। जन्म के समय बच्चे के शरीर पर धब्बे और चित्तियां होती हैं जो धीरे–धीरे समाप्त हो जाती हैं। इसका पालन–पोषण मादा ही करती है तथा वयस्क होने तक उसे अपने साथ रखती है। सांभर का बच्चा चार वर्ष में वयस्क एवं प्रजनन के योग्य हो जाता है। इसके सर पर निकलने वाले मृगशृंग इसके वयस्क होने का प्रमाण होते हैं। सांभर का जीवनकाल 12 वर्ष से 20 वर्ष तक होता है। इसे सरलता से पालतू बनाया जा सकता है और चिड़ियाघरों में रखा जा सकता है।

नास्तिक

रोचक कहानी : चाँद मोहम्मद घोसी

मांगीलाल मेहनती और ईमानदार दुकानदार था। हर सुबह दुकान पर आते ही सर्वप्रथम अपने छोटे–से पूजा–घर में जाता था।

हाथ जोड़कर विनती करके वह कहता, "हे ईश्वर, आपको बहुत–बहुत धन्यवाद! आपकी कृपा दृष्टि के कारण मेरा व्यापार पनप रहा है।"

सच यही बात थी उसकी दुकान पर दिन भर ग्राहकों की भारी भीड़ लगी रहती थी। सामान धड़ल्ले से बिक रहा था।

लक्ष्मी की विशेष कृपा से मांगीलाल धनी हो गया। उसने एक बड़ा शानदार मकान बनवाया। उच्च घराने की लड़की से विवाह किया। एक पुत्र और पुत्री की किलकारियों से उसका आंगन महकने लगा।

कुछ वर्ष बाद धन–धान्य के काम–काज में व्यस्तता बढ़ जाने के कारण पूजा–घर में जाने का उसके पास समय का अभाव रहने लगा। वह ईश्वर को धन्यवाद देने के बजाय अपने आपसे कहता, "हुंह....रोज सुबह ईश्वर को धन्यवाद क्यों दूं?"

"असल में मैंने मेहनत की, इसीलिए मैं धनवान बना भगवान ने मुझ पर कोई विशेष कृपा नहीं की...! सचमुच! भगवान आखिर है कौन?" नौकर से कहकर पूजा–घर में पूजा का सारा सामान हटवा दिया और अब मांगीलाल नास्तिक बन गया।

धनवान मांगीलाल की प्रसिद्धि व लोकप्रियता से प्रभावित समाजसेवकों ने किसी सभा में उसे आमंत्रित किया। वक्ताओं ने अलग–अलग विषयों पर अपने–अपने विचार व सुझाव रखे। सभाध्यक्ष ने मांगीलाल जी से निवेदन करते हुए कहा, "मांगीलाल जी आप धनी–मानी व्यापारी हैं

अपनी सफलता का श्रेय किसे देते हैं? क्या यह सब ईश्वर की कृपा का फल है?"

मांगीलाल जी खड़े होकर सभा को संबोधित करते हुए बोले, "ईश्वर की कृपा? बिल्कुल झूठ, मेरी सफलता मेरी मेहनत का परिणाम है। ईश्वर है ही नहीं, अगर है तो मैं उसे चुनौती देता हूँ कि पांच मिनट के अन्दर मेरा काम तमाम कर दे।"

सभागृह में सन्नाटा छा गया, मिनट गुजरते गये, सभी चुपचाप एक दूसरे का मुँह ताकने लगे, मांगीलाल का बाल भी बांका न हुआ।

और तब पुनः मांगीलाल जी बोले, "हा हा हा! मैं ठीक कहता था न कि ईश्वर है ही नहीं, वरना तो अब तक मेरे प्राण पखेरू उड़ गये होते और मैं मर चुका होता।"

मांगीलाल के ये शब्द सुनकर श्रोताओं में से एक बुजुर्ग व्यक्ति उठ खड़ा हुआ। उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा, "महाशय आपके बाल बच्चे हैं?"

प्रत्युत्तर में मांगीलाल ने कहा, "हाँ, मेरा एक लड़का है।"

बुजुर्ग बोला, "अच्छा महाशय, अगर वह आपके हाथ में बंदूक देकर कहे कि मुझे मार डालिए, तो क्या आप वैसा करेंगे?"

"हरगिज नहीं! मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ। मैं भला अपने लख्तेजिगर को कैसे मार सकता हूँ?" मांगीलाल ने बूढ़े को जवाब दिया।

बुजुर्ग वापस बोला, "अब तो आप समझ गये होंगे कि भगवान ने आपको क्यों नहीं मारा? आखिर आप भी भगवान के ही बच्चे हैं।"

"ऐं...हाँ! मैं इतनी बेवकूफी कैसे कर बैठा?" अपने आप पर मांगीलाल सबके सामने शर्मिन्दा हो गया!

उसके बाद मांगीलाल अपने पूजा–घर में पहुँचा। वहाँ पूजा–पाठ का सारा सामान रखकर प्रार्थना करते हुए ईश्वर से अर्ज करने लगा, "हे प्रभु, मुझसे बड़ी गलती हुई। कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिए।"

मांगीलाल को अब सबक मिल चुका था। वह नास्तिक से वापस भगवान का भक्त बन गया।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

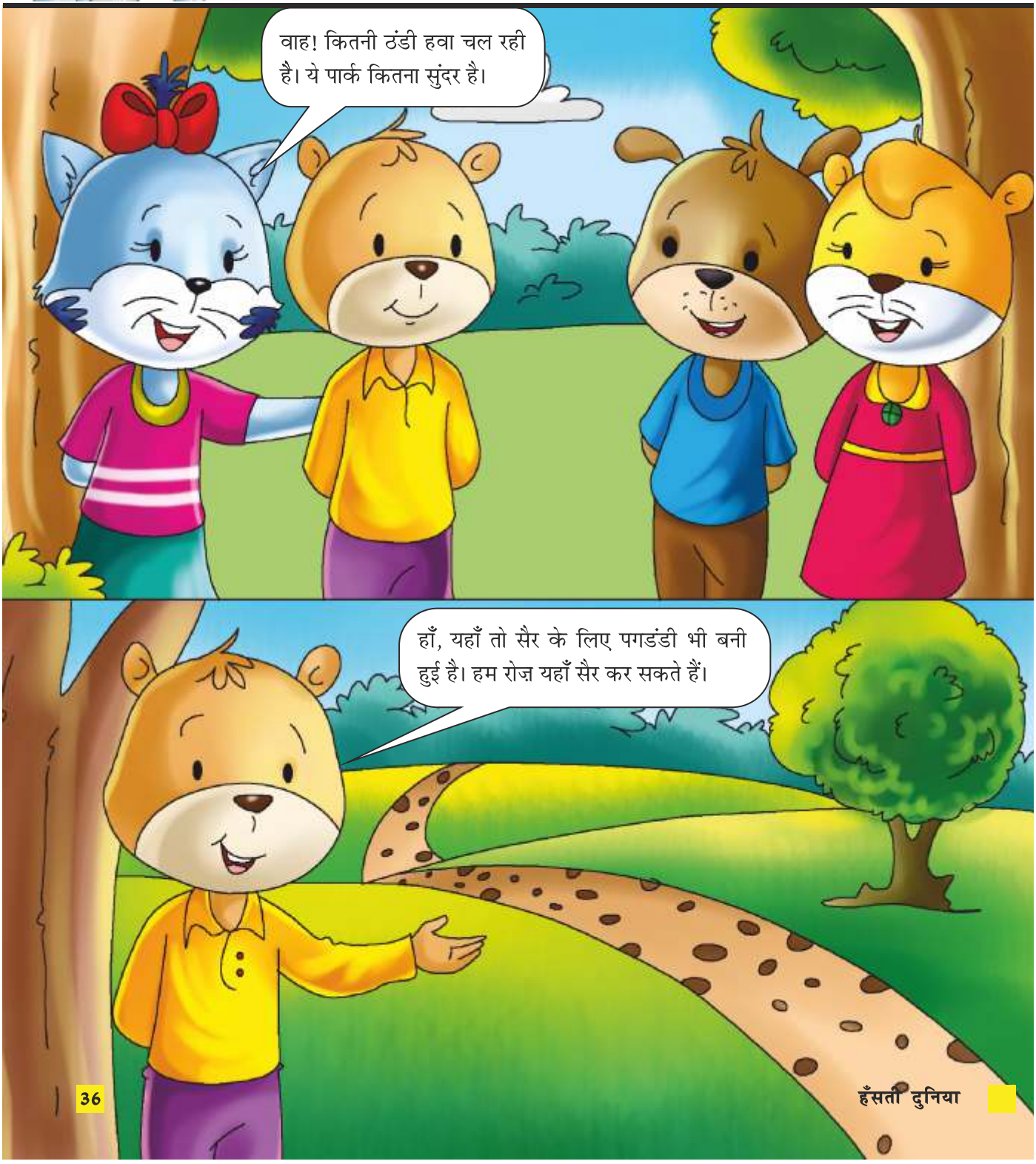

यहाँ तो कितने सुंदर फूल खिले हुए हैं। लाल, पीला गुलाब, गेंदा वाह! क्या खुशबू आ रही है फूलों से।
चलो, फूल तोड़कर माला बनाते हैं। और कुछ फूलों की पत्तियाँ तोड़कर होली खेलते हैं।
नहीं किट्टी! देखो वहाँ पर बोर्ड लगा है–'फूल तोड़ना मना है।' इसलिए हमें फूल नहीं तोड़ने चाहिए।
फूल तोड़ना मना है।

चिंटू, तुम अपना भाषण बंद करो। हम नहीं तोड़ेंगे तो और कोई तो तोड़ेगा ना! फिर पहले हम ही क्यों न तोड़ लें।
लेकिन किट्टी, हमें कोई अधिकार नहीं है कि पार्क की खूबसूरती को खराब करें। ये हमारी सम्पत्ति नहीं है।
फूल तोड़ना मना है।
लो, अब ये हो गई मेरी सम्पत्ति।
किट्टी, तुम नहीं जानती कि फूलों से हम साबुन इत्र, गुलकंद शरबत आदि कितनी तरह की चीज़ें बनाते हैं।
अगर सब तुम्हारी तरह फूलों को बर्बाद करने लग जाएँगे तो ये सब चीज़ें कहाँ से आएँगी?

कौन है वहाँ पार्क में जो फूल तोड़ रहा है? तुम सबकी अब खैर नहीं।
माली काका, ये सब बच्चे फूल तोड़ रहे थे। मैं तो कब से इन सबको फूलों के महत्व के बारे में बता रही थी।
सॉरी माली अंकल, आगे से कभी फूल नहीं तोड़ेंगे।

क्या आप जानते हैं?

—संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

★ तोते कई तरह के शब्द बोल सकते हैं। मगर तोते केवल वही शब्द सीखते हैं, जो इन्हें सिखाए जाते हैं या फिर ये नकल करते हैं। जंगली तोते नकल नहीं कर सकते। सिर्फ पालतू तोते ही नकल कर सकते हैं। अफ्रीका के भूरे तोते सबसे ज्यादा नकलची होते हैं।

★ रेफ्लीसिया का फूल दुनिया का सबसे बड़ा फूल है। यह खूबसूरत तो है लेकिन इससे सड़े हुए मांस की दुर्गंध निकलती है।

★ रेफ्लीसिया के फूल की रोचक बात यह है कि इसकी कली फूल बनने के पहले एक बड़े पत्तागोभी के आकार में बढ़ती है। इसके फूल बारिश के मौसम में रात के समय खिलते हैं।

★ चंद्रमा का प्रकाश वास्तव में सूर्य का परावर्तित प्रकाश ही होता है।

★ हम प्रत्येक 6 सेकिण्ड में अपनी आँखें झपकाते हैं।

★ नेपेंथिस के पौधे के फूल में ढक्कन होता है। जब कोई कीट पतंगा इसमें गिरता है, तो फूल का ढक्कन बंद हो जाता है।

★ पेंग्विन अंटार्कटिक सागर में 870 फीट की गहराई तक पहुँचकर 18 मिनट तक डूबा रह सकता है।

★ मानव दांत चट्टान जितने कठोर होते हैं।

★ मिस्र के पिरामिडों में फैरो बादशाह की कब्र में पाया गया शहद जब खोजी वैज्ञानिकों द्वारा चखा गया, तब भी वह उतना ही स्वादिष्ट और शुद्ध था। बस उसे थोड़ा गर्म करने की जरुरत थी।

★ कुछ कीड़े भोजन ना मिलने पर खुद के अंग ही खा जाते हैं।

★ हमारी अंगुलियों के निशान भिन्न होते हैं।

★ तितलियां किसी वस्तु का स्वाद अपने पैरों से चखती हैं।

★ आलू की खेती में विश्व में तीसरा स्थान रखने वाला भारत 16वीं सदी से पहले इसके विषय में जानता तक नहीं था।

★ विश्व में पक्षियों की 8650 प्रजातियां पायी जाती हैं। इनमें से 1230 भारत में पायी जाती हैं।

कविता : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

होली के रंगों के संग

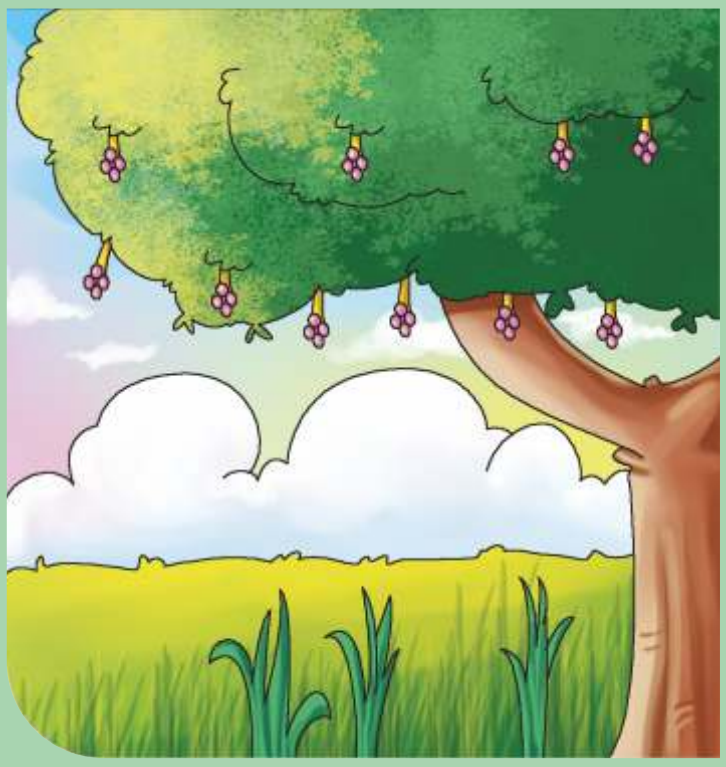

अन्तर्मन में उठी उमंग।
होली के रंगों के संग।।

सूरज की किरणों ने नभ के,
गालों पर मल दिया गुलाल।
उपवन में खिलकर गुलाब की,
कली सुर्ख हो गयी लाल।।

कमलदलों के साथ फैलती,
तालों में वो मस्त तरंग।

बौराए आमों के पत्ते,
पवन संग मिल गाते गीत।
सरसों की पीली चुनर ने,
मन अन्तर को लिया जीत।।

धरती को शृंगारित करने,
दी है छेड़ प्रकृति ने जंग।

टेसू, हरसिंगार, गेंदे से,
भौंरे ने थोड़ा रंग माँगा।
सराबोर करने तितली को,
उसके पीछे–पीछे भागा।।

लेकिन उसको कौन रंगेगा,
जन्मजात है उसका रंग।

कलरव करके पंछी कहते,
देखो फिर आया फागुन।
मोर नाचते मन्त्र–मुग्ध हो,
स्वागत में रुनझुन–रुनझुन।।

डाली–डाली कोयल कूके,
ज्यों पी ली हो उसने भंग।

होली पर विशेष : डॉ. विनोद गुप्ता

कृत्रिम रंग का सेहत पर प्रभाव

प्राकृतिक रंग और गुलाल सेहत लिए निरापद होते हैं, जबकि कृत्रिम रंग गुलाल आदि सेहत के लिए नुकसानदेह होते हैं। विडम्बना यह है कि इन्हीं का इस्तेमाल ज्यादा होता है क्योंकि ये सस्ते होते हैं और आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। किसी समय असली गुलाल लगाकर होली खेली जाती थी जो कि पेड़ से बनती थी लेकिन आज इसका स्थान कृत्रिम या संश्लेषित गुलाल ने ले लिया है और यह लाल, हरे, पीले, नीले, केसरिया आदि रंगों में उपलब्ध है।

कुछ विक्रेता गुलाल में अभ्रक मिलाते हैं जिससे वह चमकीली दिखाई देती है। यह भी सेहत को नुकसान पहुँचाती है। घटिया गुलाल में चूना, रेत या राख आदि मिलाकर उसे रंग दिया जाता है। ये सभी चीजें त्वचा को क्षति पहुँचाती हैं। यदि सामने वाला इसे शरीर पर रगड़कर लगा दे तो त्वचा छिल भी सकती है। गुलाल में यदि पोटेशियम डाईमेगनाइट मिला हो तो वह अधिक हानिकारक होता है। वैसे भी गुलाल इसलिए निरापद नहीं है क्योंकि यह पसीने में घुल कर शरीर में प्रवेश कर जाता है।

होली खेलने के दौरान जब हाथ मुंह सभी रंगों में रंगे होते हैं। ऐसे में कोई भी चीज आप खाते या पीते हैं तो रंगों का कुछ अंश मुंह के जरिए शरीर में पहुँच जाता है जो किसी घातक विष से कम नहीं। अधिकांश लोगों को कृत्रिम या रासायानिक रंगों से एलर्जी होती है। कुछ को गंभीर किस्म की एलर्जी हो जाती है जिसका उपचार बड़ा मुश्किल है वैसे भी शरीर पर छोटे–छोटे दाने या फुंसियां उभरना, त्वचा में जलन होना, घाव, खुजली, फफोले होना तो आम बात है ही। यदि शरीर पर कहीं चोट या घाव है तो उस पर लगे रंग निश्चित तौर पर हानि पहुँचाते हैं।

यदि मुंह पर रंग लगाया जाता है तो वह मुंह के जरिए शरीर में पहुँच सकता है। यदि उसमें लेड या आर्सेनिक मिला हो तो वह पेट में पहुँचकर गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। 'आरामाइन ओ' तथा 'रोडामाइन बी' जैसे रंग तो कैंसर का कारण भी बन सकते हैं। त्वचा पर खुजली या फफोले होने के लिए 'जिंक क्लोराइड' जिम्मेदार हो सकता है जो रंगों में मिला होता है। वैसे तो रंग चाहे गीले हो या सूखे, त्वचा को नुकसान पहुँचाते ही हैं पर गीले रंगों का प्रभाव ज्यादा होता है। नकली, घटिया अथवा मिलावटी रंग सेहत के दुश्मन होते हैं फिर चाहे वे गीले हो या सूखे। होली पर रंग गुलाल ही नहीं वार्निश, पेंट, तारकोल तथा ग्रीस आदि भी लोग एक दूसरे के चेहरे पर लगा देते हैं। जाहिर है ये सब त्वचा के अनुकूल नहीं है और इन्हें छुड़ाने में पसीना आ जाता है।

रासायनिक रंगों की बजाय हर्बल रंगों से होली खेलना निरापद रहता है। केसरिया रंग बनाने के लिए पानी में चंदन पाउडर तथा टेसू के फूलों का इस्तेमाल किया जा सकता है। गुलाबी रंग बनाने के लिए चुकन्दर को रातभर पानी में भिगोकर उससे तैयार किया जा सकता है। लाल रंग बनाने के लिए लाल चंदन पाउडर गुडहल के फूल आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। मेहंदी पाउडर को पानी में भिगोकर हरा रंग बना सकते हैं जबकि पीला रंग तैयार करने के लिए आटे में हल्दी पाउडर मिलाया जा सकता है। चाहे तो गेंदे के फूलों को उबाल कर भी पीला रंग तैयार कर सकते हैं। इसी प्रकार नारंगी रंग बनाने के लिए पलाश के फूलों को रात भर पानी में भिगो दे। सुबह रंग तैयार। यदि आप भूरा रंग चाहते है तो कत्थे को पानी में घोल सकते हैं। काला रंग बनाने के लिए रात को लोहे की कढ़ाई में थोड़ा आंवला चूर्ण मिला दे। सुबह काला रंग तैयार मिलेगा।

वर्ग पहेली के उत्तर

1 भा	2 ई	■	3 स	चि	4 न
5 ज	ल	■	दै	■	क
क	■	6 अ	व	7 त	ल
■	■	रु	■	मि	■
8 अ	रु	णा	च	ल	■
फ्री	■	च	■	■	9 ची
10 का	बु	ल	■	11 जू	न

पहेलियों के उत्तर :

1. तरबूज, 2. अंगूर, 3. सूरज, 4. रेल, 5. आकाश, 6. चंद्रमा, 7. शंख, 8. नाव, 9. अमरूद, 10. स्टीलहैड, 11. खड़गपुर, 12. बीजापुर।

पढ़ो और हँसो

भिखारी : दो रुपये दे दो मैंने तीन दिन से खाना नहीं खाया है।

कंजूस : दस रुपये दूंगा, पहले यह बताओ, दो रुपये में खाना कहाँ मिलता है?

★★★★★

संता गलती से समुद्र में गिर पड़ा। डूबते–डूबते उसके हाथ में एक मछली आ गई। उसने उसे उठाकर पूरी ताकत से बाहर फेंक दिया और कहा– जा कम से कम तू तो अपनी जान बचा ले।

★★★★★

लोकेश : देखो यह अच्छी बात नहीं है, जब भी मेरी पत्नी तानपूरे पर रियाज करने लगती है, तुम्हारा गधा रेंकने लगता है।

धोबी : लेकिन शुरूआत तो आपकी पत्नी ही करती है।

★★★★★

निष्ठा : (श्रद्धा से) तू इतनी देर से खाना ही खाई जा रही है?

श्रद्धा : कार्ड पर लिखा है– लंच टाईम 1 से 3 बजे तक। फिर 3 बजे तक तो खाना ही पड़ेगा। ★★★★★

राजेश : राजू से "इस पैन के ऊपर मेरा नाम लिखा हुआ है, अन्यथा यह पैन मैं जरूर तुम्हें भेंट में दे देता।"

राजू : "कोई बात नहीं मित्र, इसके आगे लिख दो– ..... की ओर से सप्रेम भेंट।

★★★★★

पागलखाने का सुपरवाइजर राउंड पर था। उसने देखा कि एक पागल ने मछली पकड़ने का कांटा वाशबेसिन में लगा रखा है।

सुपरवाइजर ने उसके पास से गुजरते हुए पूछा– 'क्या कोई मछली पकड़ी?'

पागल उसकी तरफ गौर से देख कर बोला– 'वाशबेसिन में से? तुम पागल तो नहीं हो?'

★★★★★

दादा : (पोते शेरू से) तेरी टीचर आ रही है, जा छुप जा।

शेरू : पहले आप छुप जाओ, आपकी मौत के बहाने मैंने दो हफ्ते की छुट्टी ले रखी है।

– प्रियंका चोटिया 'आंचल'

एक बच्चा बोला : आज मुझे एक रुपये का एक सिक्का मिला है।

दूसरा बच्चा : वो मेरा था।

पहला बच्चा : अरे जा मुझे तो पचास पैसे के दो सिक्के मिले हैं।

दूसरा बच्चा : मेरा सिक्का जमीन पर गिर कर टूट गया होगा।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सुशील : तुमने इतने छोटे–छोटे बाल क्यों कटवाए?

विनीत : नाई के पास पांच रुपये खुले नहीं थे। मैं बोला– पांच रुपये के और काट दे।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पत्नी : सुनो जी, डॉक्टर ने मुझे एक महीना आराम के लिए पेरिस या लंदन जाने को कहा है– हम कहाँ जाएंगे?

पति : दूसरे डॉक्टर के पास।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

डॉक्टर : (रामू से) कमजोरी है फल खाया करो, छिलके सहित। (एक घंटे बाद)

रामू : मेरे पेट में दर्द हो रहा है।

डॉक्टर : क्या खाया था?

रामू: अन्नानास और नारियल छिलके सहित।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

निष्ठा : (मेहमान से) जब मैं दो साल की थी तो छत से गिर गई थी?

मेहमान :फिर क्या तुम बच गई थी?

निष्ठा :पता नहीं, उस समय मैं बहुत छोटी थी।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

लाली अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?

मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एक मुर्गा मालिक को खिड़की से बैठा देख रहा था। मालिक बहुत बीमार था, मालिक की पत्नी उसके बगल में बैठी थी।

पत्नी बोली– आपको बहुत तेज बुखार है मैं आपके लिए चिकन सूप बनाकर लाती हूँ।

इतना सुनते ही मुर्गे के तोते उड़ गये।

मुर्गा बोला– बहन जी, एक बार क्रोसिन देकर भी देख लो।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

राजन : तुम्हें जानकर खुशी होगी कि मुझे नौकरी मिल गई है।

सुशील : तनख्वाह तो अच्छी होगी?

राजन : तनख्वाह तो कुछ खास ज्यादा नहीं लेकिन मुझे अधिकार बहुत मिले हैं। मैं एक पल में ऊपर पहुँचे व्यक्ति को नीचे ला सकता हूँ और नीचे के आदमी को ऊपर पहुँचा सकता हूँ।

सुशील : यह कौन सी नौकरी है?

राजन : लिफ्टमैन की।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

एक महिला अपनी भूलने की आदत से बहुत परेशान थी। वह अपनी सहेली से बोली– मुझे भूलने की बहुत बुरी आदत है। अगर मैं बाजार से चार चीजें लेने जाती हूँ तो दो ही लेकर आती हूँ।

इस पर उसकी सहेली बोली– मेरा तो इससे भी बुरा हाल है। अगर मैं सीढ़ियां चढ़ रही होती हूँ तो रुक कर सोचना पड़ता है कि मैं चढ़ रही थी या उतर रही थी।

– गुरचरण आनन्द, लुधियाना

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन्म दिन मुबारक

आरियाना, आयान (न्यूजर्सी)

विनम्रता (दिल्ली)

भविता (चाविंडादेवी)

आलिया (सांगली)

करिश्मा (सूरत)

पुनिया (दिल्ली)

कियारा (दिल्ली)

जे.हितेन (होसपेट)

अश्विता (शहीदीपुर)

वैष्णवी (कल्याण)

जसप्रीत सिंह (लुधियाना)

सिद्धान्त (भतरौला)

उर्वी (कठुआ)

परी (पटियाला)

अर्पिता (बार्सिलोना)

रुद्रांश (अलीगढ़)

प्राची (अजमेर)

हंसिका (चीका)

समरूप (पातड़ा)

विनम्र (चण्डीगढ़)

भूमि (जीन्द)

वंश (सांगली)

अभय (श्रीगंगानगर)

स्नेहील (चूरू)

नवीन (सतना)

पुण्या (दिल्ली)

आदर्श (फरीदाबाद)

मंजुनाथ

सार्थक (कोल्हापुर)

उदान्तिका (फरीदाबाद)

समनित (सिवनी)

लक्ष्य (पंचकुला)

अर्पित (टोंक)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

कविता :
मदन 'शेखपुरी'

तुम सोने–से खरे हो बच्चो!

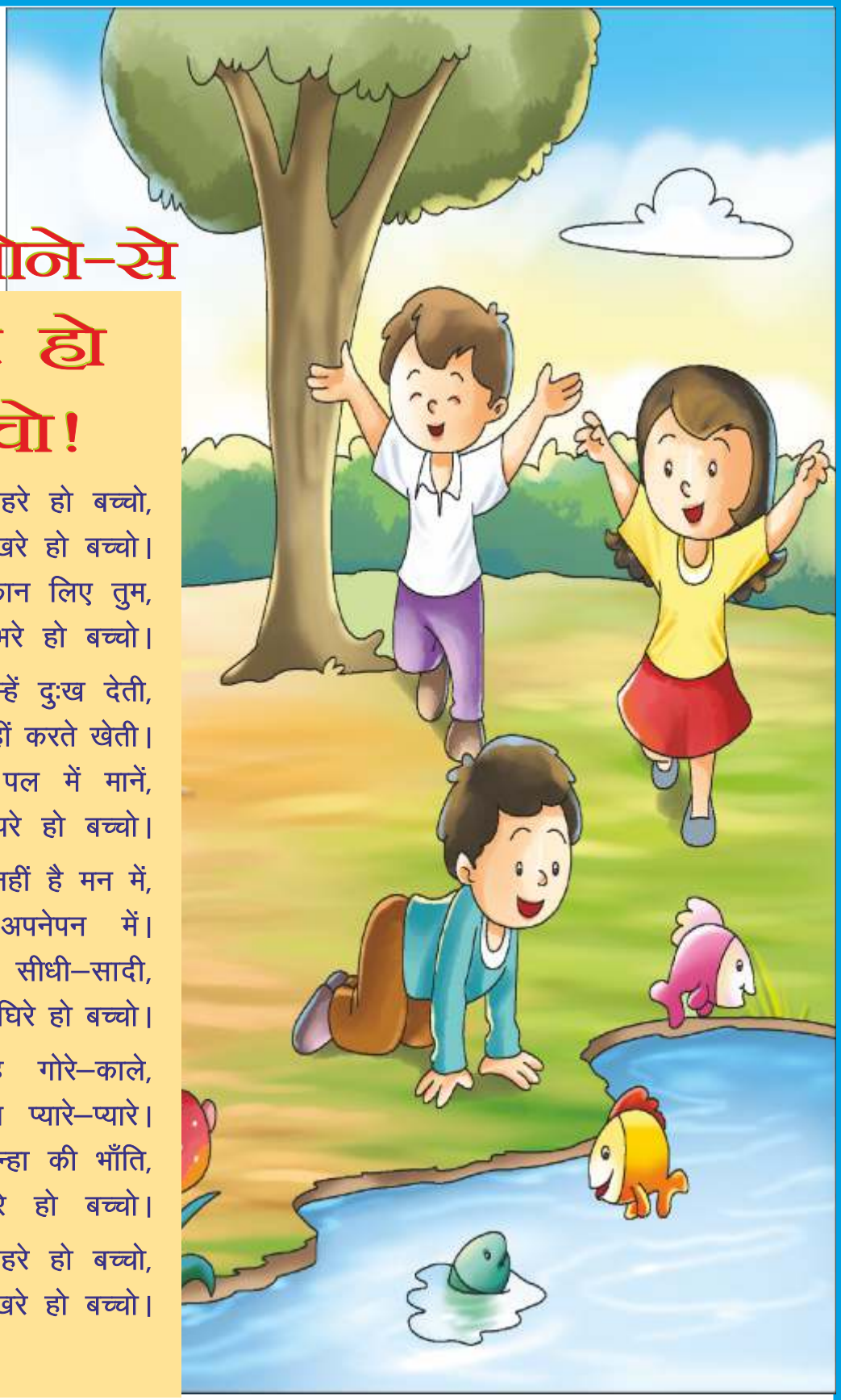

हरी घास–से हरे हो बच्चो,
तुम सोने–से खरे हो बच्चो।
फूलों–सी मुस्कान लिए तुम,
प्रेम–प्यार से भरे हो बच्चो।

केवल भूख तुम्हें दुःख देती,
उलझन की नहीं करते खेती।
पल में रूठें पल में मानें,
भेद–भाव से परे हो बच्चो।

लालच, लोभ नहीं है मन में,
खोए रहते अपनेपन में।
भोली–भाली, सीधी–सादी,
इस आदत से घिरे हो बच्चो।

रंग के चाहे गोरे–काले,
लगते हो तुम प्यारे–प्यारे।
गोकुल के कान्हा की भाँति,
सारे एक सरे हो बच्चो।

हरी घास–से हरे हो बच्चो,
तुम सोने–से खरे हो बच्चो।

जनवरी अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

सुकन्या जोशी
आयु 13 वर्ष
ए–331, त्रिवेणी नगर,
गोपालपुरा, जयपुर (राज.

द्वितीय :

चिन्मय हिरडे
आयु 12 वर्ष
नूतन स्कूल के पास, रामनगर,
गोंदिया (महा.)

तृतीय :

नवनीत बधान
आयु 11 वर्ष
गाँव व पोस्ट : किन्नू,
जिला : ऊना (हि.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

निष्ठा छाबड़ा (राजा पार्क, जयपुर),
दीक्षा कुमारी (देहरा),
भविता (चाविण्डा देवी),
पलक वर्मा (सेक्टर 52, चण्डीगढ़),
नन्दिनी (शास्त्री नगर, दिल्ली),
हिमांशु (शिवाजी नगर, गुड़गांव),
काशवी बजाज
(निरंकारी कालोनी, दिल्ली),
अनुपमा कोहली (जैंती, अल्मोड़ा),
जाह्नवी खन्ना (त्रिपुरी टाउन, पटियाला),
वैभव किशोर (डांगौली वांगर),
पूनम कुमारी (न्यू नेवी नगर, कोलाबा),
नेहल, प्रेयल (मुर्तिजापुर),
यशमीन (श्रीगंगानगर),
पीयूष अग्रवाल (बिनागुड़ी),
जमुना (4–के.एस.पी)
हितेष कोटला (निम्बूचौड़),
ऊषा (सेक्टर 40–ए, चण्डीगढ़),
रोशनी सैनी (रायपुर),
स्नेहा (जीन्द)।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 मार्च तक कार्यालय** 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **मई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

बताइए कौन करेगा हवाई जहाज से यात्रा

–चाँद मोहम्मद घोसी

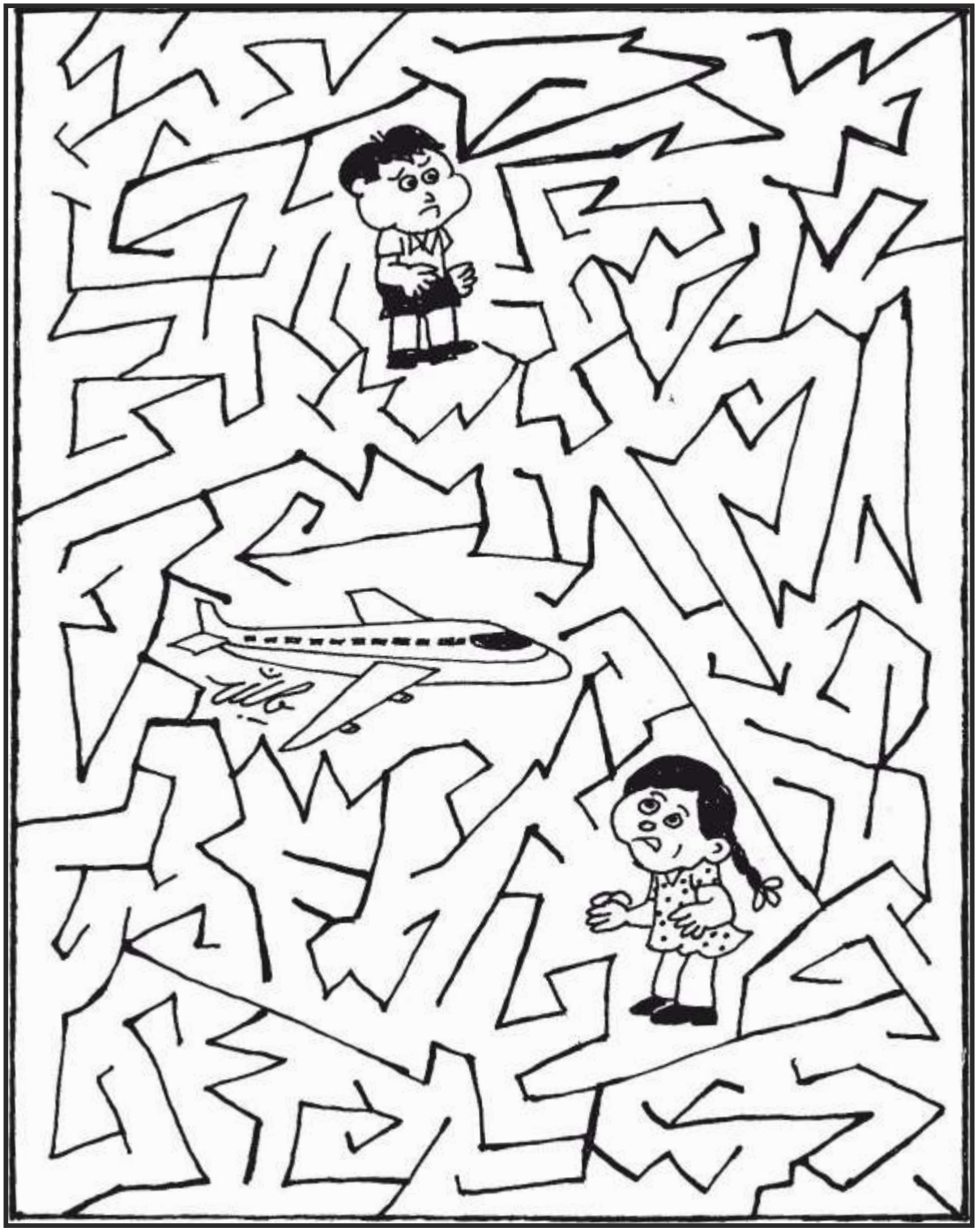

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF

music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

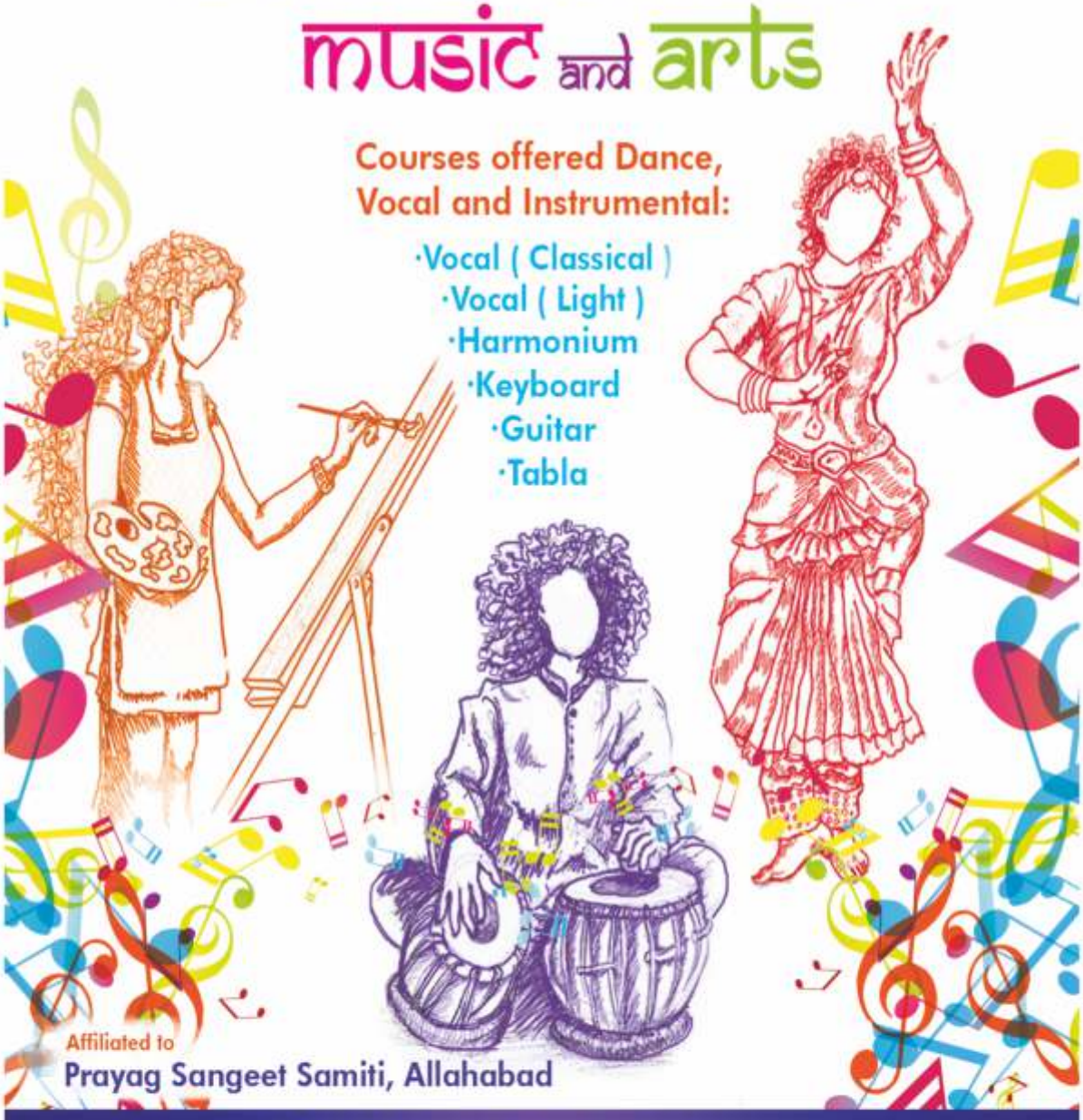

Affiliated to

Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony

Email: nvc@nirankarifoundation.org

Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)